RNI NO Title Code-UPHIN49594

हिन्दी दैनिक

नवयुग समाचार

बहराइच से प्रकाशित

एक सामाजिक दर्पण

वर्ष-3 अंक-303
बहराइच,शुक्रवार
13 दिसंबर 2024
पृष्ठ-4 मूल्य 2.00

लखनऊ, उन्नाव, हरदोई, कानपुर, कन्नौज, फरुर्खाबाद, गोरखपुर, अंबेडकरनगर, म.प्र., बिहार में प्रसारित

गिरिराज सिंह ने संसद परिसर में सोनिया और सोरेस का पोस्टर लहराया

नई दिल्ली

संसद का शीतकालीन सत्र की शुरूआत से सदन में अडानी और जॉर्ज सोरोस समेत कई मुद्दों को लेकर हंगामे का दौर जारी है। इंडिया गठबंधन की तरफ से अडानी मुद्दे को हवा दी जा रही है। बुधवार को कांग्रेस सांसदों ने सत्ता पक्ष के नेताओं को तिरंगा और गुलाब देकर अपना प्रदर्शन किया था। इससे पहले लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी और सांसद प्रियंका गांधी अडानी की फोटो छपे बैग लेकर परिसर पहुंचे थे।

अब बीजेपी ने सोरोस मुद्दे को लेकर संसद में प्रदर्शन शुरू किया है। बीजेपी सांसद और केंद्रीय मंत्री गिरिराज सिंह ने संसद परिसर में सोनिया और सोरेस का पोस्टर लहराया है। वहीं, विपक्ष की तरफ से भी संसद परिसर में प्रोटेस्ट हो रहा है। विपक्षी सांसदों ने देश बिकने नहीं देंगे नारे के साथ संसद में विरोध प्रदर्शन किया। बीजेपी ने 9 दिसंबर को राहुल गांधी पर भारत को कथित तौर पर अस्थिर करने के लिए जॉर्ज सोरोस जैसी अंतरराष्ट्रीय ताकतों के साथ मिलीभगत का आरोप लगाया था।

फिलिस्तीनी राजदूत प्रियंका गांधी से मिले, वायनाड सांसद बनने पर दी बधाई

नई दिल्ली

भारत में फिलिस्तीन के राजदूत आबेद ऐलराजेग अबू जाजेर ने बुधवार को कांग्रेस सांसद प्रियंका गांधी से मुलाकात की है। उन्होंने प्रियंका को वायनाड लोकसभा चुनाव में बड़ी जीत हासिल करने पर बधाई दी। इस मुलाकात में प्रियंका गांधी ने स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिए फिलिस्तीनी लोगों के संघर्ष के लिए अपने समर्थन देने की बात कही।

उन्होंने कहा कि वह बचपन से ही फि लिस्तीनी हितों के लिए जी रही हैं और इसके न्याय में विश्वास करती हैं। इसके अलावा उन्होंने बचपन में फिलिस्तीनी नेता यासिर अराफात की भारत यात्रा के दौरान कई बार पूर्व पीएम इंदिरा गांधी, राजीव गांधी से मुलाकात का जिक्र किया।

इस दौरान प्रियंका ने गाजा में चल रही इजराइली सैन्य कार्रवाइयों की निंदा की और क्षेत्र में विनाश और तबाही के लिए गहरा दुख व्यक्त किया। प्रियंका गांधी ने कहा कि मैं हर उस मां के प्रति संवेदना व्यक्त करती हूं जिसने अपना बच्चा खोया है। उन्होंने गाजा में संकट को संबोधित करने में अंतरराष्ट्रीय समुदाय की चुप्पी की भी आलोचना की।

वहीं, फिलिस्तीन के राजदूत ने गाजा में युद्धविराम की दिशा में भारत की भूमिका के महत्व की बात कही। उन्होंने गाजा में भारत के प्रभाव के महत्व पर जोर देते हुए फिलिस्तीनी अधिकारों के लिए भारत के निरंतर समर्थन पर प्रकाश डाला। उन्होंने फिलिस्तीन और भारत के राजनीतिक दलों के बीच ऐतिहासिक संबंधों को भी याद किया, जिसमें कांग्रेस पार्टी भी शामिल है, जो लंबे समय से फिलिस्तीनी आत्मनिर्णय की वकालत करती रही है।

गुकेश वर्ल्ड चेस चैंपियन

विश्वनाथन आनंद के बाद दूसरे भारतीय चैंपियन

संगापुर

भारतीय ग्रैंडमास्टर डी गुकेश ने वर्ल्ड चेस चैंपियनशिप का खिताब जीत लिया है। ऐसा करने वाले वह दुनिया के सबसे युवा प्लेयर बन गए हैं। उनकी उम्र महज 18 साल है। उन्होंने चीन के डिफेंडिंग चैंपियन डिंग लिरेन ने को 14वें गेम में 1-0 से हराया। अब स्कोर 7.5-6.5 हो गया है। बुधवार को वर्ल्ड चेस चैंपियनशिप की 13वीं बाजी में 68 चाल के बाद गुकेश को गेम ड्रॉ खेलना पड़ा था।

रविवार तक 11 गेम के बाद गुकेश 6-5 से आगे थे। 11 में से 8 गेम ड्रॉ रहे थे, जबकि 2 में गुकेश और 1 में लिरेन को जीत मिली थी। लेकिन लिरेन ने वापसी की और 12वां गेम जीत लिया और स्कोर फिर बराबर कर दिया। चैंपियन बनने के लिए खिलाड़ी 7.5 पॉइंट्स तक पहुंचना होगा।

11वां गेम गुकेश ने जीता, 12वें में लिरेन की वापसी

रविवार तक 11 गेम के बाद गुकेश 6-5 से आगे थे। 11 में से 8 गेम ड्रॉ रहे थे, जबकि 2 में गुकेश और 1 में लिरेन को जीत मिली थी। लेकिन लिरेन ने वापसी की और 12वां गेम जीत लिया और स्कोर फिर बराबर कर दिया। बुधवार को 13वां गेम भी ड्रॉ रहा, जिसके बाद स्कोर 6.5-6.5 से बराबर हो गया था।

दुष्कर्म पीड़िता के परिवार से मिलने अचानक हाथरस पहुंचे राहुल

हाथरस

सांसद राहुल गांधी यूपी के हाथरस पहुंचे। राहुल के अचानक हाथरस पहुंचने की खबर से हाथरस का मूलगादी गांव और चंद्रपा थाना चर्चा में आ गया, जहां चार साल पहले एक दलित बेटी की मौत ने प्रदेश और देश में सियासी तूफान खड़ा कर दिया था। इससे पहले प्रियंका गांधी के साथ 24 नवंबर को संभल हिंसा में मारे गए पांच नौजवानों के परिवारों से राहुल गांधी ने मुलाकात की थी।

यूपी के उपमुख्यमंत्री ब्रजेश पाठक ने राहुल गांधी के हाथरस दौरे पर कहा कि राहुल गांधी हताश हैं, उन्हें यह भी नहीं पता कि हाथरस मामले की सीबीआई जांच हो चुकी है और मामला कोर्ट में है। कभी उन्हें संभल जाना है, कभी अलीगढ़ जाना है। यूपी इंफ्रास्ट्रक्चर, कानून-व्यवस्था के मामले में सबसे बेहतर राज्य बनने की ओर अग्रसर है। वे यहां अराजकता की आग और लोगों को भड़काना चाहते हैं।

बता दें 14 सितंबर 2020 को हाथरस के बूलगढ़ी

गांव में 19 साल की एक दलित युवती घायल अवस्था में मिली थी। पीड़िता अपनी मां और भाई के साथ स्थानीय चंदपा थाने पहुंचती है, थाने में पीड़िता के भाई ने आरोप लगाया कि गांव के संदीप ने उसकी बहन के साथ गलत काम किया है। बिगड़ती हालत देख पीड़िता को अस्पताल में भर्ती कराया गया था। इस घटना के अगले दिन 15 सितंबर को एफआईआर दर्ज करवाई गई थी। मामला तब तूल पकड़ गया जब घटना के 5 दिन बाद 19 सितंबर को पीड़िता ने बयान दिया कि संदीप के साथ दो अन्य लड़के और थे, उसके साथ छेड़छाड़ भी की गई और जबान काट दी गई।

मेटा सर्वर आउटेज: दुनियाभर में व्हाट्सएप, इंस्टाग्राम और फेसबुक रहे ठप

नई दिल्ली

बुधवार की रात मेटा के तीन बड़े सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स- व्हाट्सएप, इंस्टाग्राम और फेसबुक, अचानक ठप हो गए। इस आउटेज ने दुनियाभर के करोड़ों यूजर्स को प्रभावित किया। भारत में रात 11 बजे से यह समस्या शुरू हुई। व्हाट्सएप पर मैसेज भेजने और रिसीव करने में परेशानी हुई। इंस्टाग्राम और फेसबुक पर फीड अपलोड करना मुश्किल हो गया। थ्रेड्स ऐप भी इस आउटेज से प्रभावित हुआ।

यह स्थिति करीब दो घंटे तक बनी रही, जिससे यूजर्स को बड़ी असुविधा हुई मेटा के सर्वर डाउन होने का कारण अब तक पूरी तरह स्पष्ट नहीं हो पाया है। कंपनी ने इसे एक तकनीकी खामी बताया है। मेटा ने एक्स पर बयान जारी कर कहा कि उनकी टीम समस्या को ठीक करने के लिए तेजी से काम कर रही है। बयान में यह भी कहा गया कि सर्विस को बहाल करने के लिए जरूरी कदम उठाए जा रहे हैं। हालांकि, इस समस्या का सटीक कारण मेटा की ओर से अभी तक सार्वजनिक नहीं किया गया है।

मेटा ने बताई वजह

मेटा ने एक्स पर बयान जारी करते हुए अपने ग्लोबल आउटेज की पुष्टि की। कंपनी ने कहा कि यह एक तकनीकी खामी के कारण हुआ, जिससे यूजर्स को व्हाट्सएप, फेसबुक और इंस्टाग्राम एक्सेस करने में दिक्कत हुई। मेटा ने भरोसा दिलाया कि उनकी तकनीकी टीम तेजी से समस्या को ठीक करने में जुटी है। बयान में लिखा गया, हम जानते हैं कि कुछ यूजर्स को हमारी ऐप्स एक्सेस करने में परेशानी हो रही है। हम इसे जल्द ठीक करने की कोशिश कर रहे हैं। असुविधा के लिए खेद है।

एक्स पर ट्रेंड हुए जुकरबर्ग और व्हाट्सएप

मेटा आउटेज के दौरान मार्क जुकरबर्ग और व्हाट्सएप एक्स पर ट्रेंड करने लगे। यूजर्स ने जुकरबर्ग पर मजाकिया टिप्पणियां और मीम्स शेयर किए। वहीं, कुछ यूजर्स ने एलन मस्क के ट्विटर को सबसे भरोसेमंद प्लेटफॉर्म बताया। मेटा डाउन और जुकरबर्ग जैसे शब्द पूरी रात ट्रेंडिंग लिस्ट में रहे। हालांकि, सुबह तक सभी कंपनियों ने अपनी सर्विसेज रीस्टोर कर दी।

जम्मू-कश्मीर के पर्यटन स्थल बर्फ से ढंके, रुक-रुक कर हो रही बर्फबारी

दिल्ली से ज्यादा ठंडा एनसीआर, आने वाले दो दिन ऐसा ही रहेगा मौसम

नई दिल्ली

जम्मू-कश्मीर के खूबसूरत पर्यटन स्थल बर्फ से ढके हैं, क्योंकि घाटी के कई इलाकों में ताजा बर्फबारी हुई है, इसमें बांदीपुरा, बारामुल्ला और गुरेज शामिल हैं। कश्मीर के बर्फ से ढके पहाड़ों ने पर्यटकों को ठंड के मौसम में खुश होने का मौका दिया है। प्रशासन के अधिकारियों के अनुसार, गुलमर्ग, सोनमर्ग और गुरेज में ताजा बर्फबारी हुई, जबकि घाटी के अन्य इलाकों में रुक-रुक कर बर्फबारी हो रही है। ऐसा जम्मू-कश्मीर में आए ताजा पश्चिमी विक्षोभ के कारण हुआ है, इससे घाटी के ऊंचे इलाकों में भारी बर्फबारी हुई है। पिछले महीने, लद्दाख में भी मौसम की पहली बर्फबारी हुई, जिसने खूबसूरत पहाड़ों को सफेद चादर से ढक दिया। कश्मीर के ऊंचे इलाकों में बर्फबारी हुई है, लेकिन मौसम में मैदानी इलाकों में अभी तक बर्फबारी नहीं हुई है। सोनमर्ग में बर्फबारी ने पर्यटकों के लिए आकर्षण का केंद्र बना दिया है, क्योंकि लोग हिमालय के मौसम का आनंद लेने और खुद को ठंड से बचाने के लिए गर्म कपड़ों और स्कार्फ में बर्फ से ढकी जमीन पर निकल पड़े हैं। इस बीच, आसमान में बादल छाए रहने के कारण श्रीनगर सहित पूरे कश्मीर में रात का तापमान बढ़ गया। हालांकि, कश्मीर घाटी में न्यूनतम तापमान हिमांक बिंदु से नीचे रहा।

श्रीनगर शहर में न्यूनतम तापमान माइनस 3 डिग्री सेल्सियस दर्ज हुआ, जो पिछली रात के मौसम के सबसे कम माइनस 5.4 डिग्री

सेल्सियस से अधिक था। गुलमर्ग में न्यूनतम तापमान माइनस 6 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया, जबकि पहलगाम में न्यूनतम तापमान माइनस 1.8 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। काजीगुंड में न्यूनतम तापमान शून्य से 4.4 डिग्री सेल्सियस नीचे और कुपवाड़ा में शून्य से 4.5 डिग्री सेल्सियस नीचे दर्ज किया गया।

दिल्ली से ज्यादा ठंडा एनसीआर, छप्पर पर जमी सफेद परत

धीरे-धीरे सर्दी के तेवर दिखाने लगे हैं। एनसीआर के रेवाड़ी, महेंद्रगढ़ और नारनौल में दिल्ली से ज्यादा सर्दी पड़ रही है। मौसम विभाग के मुताबिक, बृहस्पतिवार को न्यूनतम तापमान दो डिग्री सेल्सियस के साथ सबसे सर्द सुबह रहा। पिछले साल की तुलना में दिसंबर पहले 12 दिन ज्यादा ठंडक रहे हैं। वहीं, नारनौल में 2.2 डिग्री सेल्सियस और महेंद्रगढ़ में 1.2 डिग्री सेल्सियस तापमान दर्ज हुआ।

पिछले छह दिनों से न्यूनतम तापमान दस डिग्री सेल्सियस से नीचे चल रहा है। गुरुवार सुबह से ही आसमान साफ होने और धूप निकलने के बाद भी ठिठुरन से राहत नहीं मिली है। खुले में रखे टंकियों का पानी फ्रीज में रखे हुए ठंड की तरह है। कृषि विशेषज्ञों के अनुसार अभी सर्दी का फसलों विशेषकर गेहूं और सरसों के लिए फायदेमंद है। दिन में अच्छी धूप निकलने से फसलों को फायदा मिलेगा। आने वाले दो-तीन दिन ऐसी ही स्थिति रह सकती है।

गुरुग्राम में 6.2 डिग्री पारे के साथ सीजन की सबसे सर्द सुबह रही

गुरुग्राम में लगातार पारा लुढ़क रहा है। 6.2 डिग्री सेल्सियस तापमान के साथ सीजन की सबसे सर्द सुबह रही। छह बजे से नौ बजे तक ठंडी हवा ने ठिठुरन बढ़ा दी। दिन में अच्छी धूप खिली और दिनभर मौसम साफ रहा। अधिकतम तापमान 21.2 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। तीन दिन से लगातार तापमान में गिरावट आने से सुबह-शाम अचानक सर्दी बढ़ गई है। लोग अब गरम कपड़े पहने हुए नजर आने लगे हैं।

केजरीवाल का ऐलान, आप सरकार महिलाओं को देगी हर माह एक हजार

नई दिल्ली,

दिल्ली की आप सरकार महिलाओं को हर महीने एक हजार रुपए देगी। इस योजना को महिला सम्मान योजना नाम दिया गया है। 18 साल की उम्र पूरी करने वाली हर महिला इस स्कीम के दायरे में आएगी। दिल्ली के पूर्व सीएम और आम आदमी पार्टी के नेशनल कन्वीनर अरविंद केजरीवाल ने गुरुवार को इस स्कीम का ऐलान किया। उन्होंने कहा योजना के लिए आज से ही रजिस्ट्रेशन शुरू किए जा रहे हैं। केजरीवाल ने यह भी कहा कि चुनाव के बाद महिलाओं को हर महीने

मिलने वाली रकम को बढ़ाकर 2100 कर दिया जाएगा।

इससे पहले केजरीवाल ने ऑटो चालकों के लिए भी घोषणाएं की हैं। इसके अनुसार ऑटो चालक की बेटी की शादी के लिए एक लाख रुपए दिए जाएंगे। होली-दीवाली पर वर्दी बनवाने के लिए ढाई-ढाई हजार रुपए देंगे। दस लाख रुपए का लाइफ इंश्योरेंस, पांच लाख का एक्सीडेंटल इंश्योरेंस कराया जाएगा। ऑटो चालकों के बच्चों की कोचिंग के लिए पैसा दिया जाएगा। आप सरकार की यह पांच गारंटी क्या असर डालती है यह आगामी विधानसभा चुनावों में ही नजर आएगा।

संपादकीय

अरावली की बलि

उस खबर ने हर संवेदनशील और जागरूक व्यक्ति को उद्वेलित किया है कि हरियाणा के नूंह के पास 22 अरब रुपये कीमत के पहाड़ को खनन माफिया चट कर गया। निस्संदेह, यह परेशान करने वाला घटनाक्रम नूंह जिले में राजस्थान सीमा पर स्थित पहाड़ से जुड़ा है, जो अरावली पर्वतमाला का हिस्सा है। विडंबना यह है कि सुप्रीम कोर्ट द्वारा प्रतिबंधित क्षेत्र में दुर्भाग्यपूर्ण घटनाक्रम तंत्र की काहिली व सत्ताधीशों की गैरजिम्मेदारी से पनपा है। खनन विभाग की रिपोर्ट बताती है कि उपमंडल फिरोजपुर झिरका के कुछ इलाकों में खनन माफिया ने इस कृत्य को अंजाम दिया। कैसी विडंबना है कि गैर कानूनी तरीके से धन अर्जित करने की दबंगों की लिप्सा हमारे पर्यावरण व लोगों के जीवन से खिलवाड़ करने से भी गुरेज नहीं करती। दुर्भाग्यपूर्ण घटनाक्रम यह भी है कि अवैध खनन माफिया से टक्कर लेने वाले कई अधिकारियों को तबादले के रूप में खमियाजा भी भुगतना पड़ा है। नागरिक संगठनों की उदासीनता भी उन खनन माफियाओं का हौसला बढ़ाती है, जो सत्ता के गलियारों में खासा रसूख रखते हैं। निश्चित रूप से हमारे पारिस्थितिकीय तंत्र के संतुलन में निर्णायक भूमिका निभाने वाली इन पहाड़ियों को आज पुनर्जीवित करने की जरूरत है। पर्यावरण पुनर्स्थापना हेतु भूमिक्षरण और मरुस्थलीकरण से निबटने के लिये बाकायदा केंद्रीय पर्यावरण मंत्रालय द्वारा अरावली ग्रीन वॉल प्रोजेक्ट चलाया जा रहा है। इसके अंतर्गत हरियाणा, राजस्थान, गुजरात और दिल्ली में ग्यारह लाख मिलियन हेक्टेयर क्षेत्र को कवर करते हुए, इस चौदह सौ किलोमीटर लंबे और पांच किलोमीटर चौड़े हरित गलियारे को बनाने का लक्ष्य है कि अरावली पहाड़ियों की पारिस्थितिकीय जीवन शक्ति को फिर से बहाल किया जा सके। एक समय था कि ये पहाड़ियां जंगल, वन्य जीवों, जलचरों और प्राकृतिक जल निकासी के जरिये एक समृद्ध पारिस्थितिकीय तंत्र बनाती थी। लेकिन दुर्भाग्य से अब अरावली पर्वत श्रृंखला देश की सबसे खराब स्थितियों के लिये जानी जाती है। इस दिशा में सत्ताधीशों की उदासीनता और नियामक संस्थाओं की लापरवाही से हरियाणा में यह स्थिति खासी शोचनीय है। यह स्थिति दुर्भाग्यपूर्ण ही है कि अरावली पर्वत श्रृंखला की तीस से अधिक पहाड़ियां पहले ही लुप्तप्राय हो चुकी हैं। खासकर हरियाणा के गुरुग्राम, फरीदाबाद, मेवात, महेंद्रगढ़ और रेवाड़ी जिलों से लगते इलाकों में। निरंतर होते शहरों के विस्तार ने हरे-भरे परिदृश्यों को कंक्रीट के जंगलों में तब्दील कर दिया है। जिसके चलते पूरे इलाके का पारिस्थितिकीय संतुलन बाधित हुआ है। सदियों में विकसित हुई वन संपदा व जीव-जंतुओं के अधिवास अब विलुप्त होने के कगार पर हैं। निस्संदेह, इस कथित विकास की कीमत हमें लंबे समय तक चुकानी होगी। जिसके अंतर्गत स्वदेशी वृक्षों की अनेक महत्वपूर्ण किस्में व दुर्लभ वन्य जीवों की प्रजातियां विलुप्त होने के कगार पर जा पहुंची हैं। साथ ही अनेक महत्वपूर्ण भूजल पुनर्भरण क्षेत्र सूख गए हैं। उल्लेखनीय है कि सऊदी अरब की हरित पहल से प्रेरित होकर ही ग्रीन वॉल प्रोजेक्ट को इस विनाशकारी अतिक्रमण को रोकने के लिये लाया गया था। स्वदेशी वन संपदा को सामुदायिक जुड़ाव के जरिये संरक्षित करने की योजना थी। इसके अंतर्गत 35000 हेक्टेयर बंजर भूमि को उपजाऊ बनाना भी मकसद था। निस्संदेह, इस पर्यावरणीय संकट से निबटने के लिये पर्वत श्रृंखला के निकटवर्ती राज्यों में सहयोगात्मक प्रयास जरूरी हैं। उल्लेखनीय है कि विश्व बैंक भी वनीकरण, जल संरक्षण और प्रदूषण नियंत्रण जैसी पहलों के लिये वित्त पोषण करके अरावली परियोजना को संबल दे रहा है।

(चिंतन-मनन)

ईश्वर का दोस्त

एक संत ने एक रात स्वप्न देखा कि उनके पास एक देवदूत आया है। देवदूत के हाथ में एक सूची थी। उसने कहा, यह उन लोगों की सूची है, जो प्रभु से प्रेम करते हैं। संत ने कहा, मैं भी प्रभु से प्रेम करता हूं। मेरा नाम तो इसमें अवश्य होगा। देवदूत बोला, नहीं, इसमें आप का नाम नहीं है। संत उदास हो गए। फिर उन्होंने पूछा, इसमें मेरा नाम क्यों नहीं है? मैं ईश्वर से ही प्रेम नहीं करता बल्कि गरीबों से भी प्रेम करता हूं। मैं अपना अधिकतर समय निर्धनों की सेवा में लगाता हूं। उसके बाद जो समय बचता है उसमें प्रभु का स्मरण करता हूं। तभी संत की आंख खुल गई। दिन में वह स्वप्न को याद कर उदास थे। एक शिष्य ने उदासी का कारण पूछा तो संत ने स्वप्न की बात बताई और कहा, लगता है सेवा करने में कहीं कोई कमी रह गई है। दूसरे दिन संत ने फिर वही स्वप्न देखा। वही देवदूत फिर उनके सामने खड़ा था। इस बार भी उसके हाथ में कागज था। संत ने बेरुखी से कहा, अब क्यों आए हो मेरे पास? मुझे प्रभु से कुछ नहीं चाहिए। देवदूत ने कहा, आपको प्रभु से कुछ नहीं चाहिए, लेकिन प्रभु का तो आप पर भरोसा है। इस बार मेरे हाथ में दूसरी सूची है। संत ने कहा, तुम उनके पास जाओ जिनके नाम इस सूची में हैं। मेरे पास क्यों आए हो?

महाकुंभ पर्व पर विशेषः प्रयागराज का महाकुंभ सामाजिक समरसता और एकता का महासूत्र

–सुरेश सिंह बैस शाश्वत

विभिन्न धर्मों और संप्रदायों में विश्वास करने वाला हमारा यह देश है। यहां अनेक पर्व, उत्सव और मेले आयोजित होते हैं, इसलिए यह कहावत है ₹सात वार और नौ त्यौहार' ! धार्मिक पर्वो और उत्सवों से त्याग, तप, साधना, परोपकार, धार्मिक जागृति और आध्यात्मिक चेतना के दर्शन होते हैं। ऐसे ही सनातनधर्मियों का, हिन्दुओं का सबसे बड़ा धार्मिक पर्व है कुंभ, या कह सकते हैं महाकुम्भ, जो विश्व का सबसे बड़ा मेला कहा जा सकता है। यह महापर्व कब, क्यों और कहां मनाया जाता है, इसके आधार को पुराणों में उल्लेखित निम्न पंक्तियों से समझा जा सकता है।

कुशस्थली तीर्थवर, देवानामपि, दुर्लभ्य। माधवे, धवले पक्षे सिंह जीवे इनोश्चगे। तुलाराशौ क्षपानाथे स्वातिथे पूर्णिमा तिथौ। व्यतिपाते तु सम्प्राप्ते चंद्रवासर संयुते। । एजेनशत महायोगः स्थानान्मुक्ति फलप्रदा। । उक्त संदर्भ समुद्र मंथन से है। जब देव दानवों द्वारा समुद्र मंथन किया गया, मंथन से अमृत सहित चौदह दिव्य रत्नों की प्राप्ति, अमृत पर अधिकार के लिये देव-दानवों में संघर्ष और संघर्ष में भारत के चार प्रमुख तीर्थों में अमृत बिन्दु का छलक पड़ना। अमृत बिन्दु पतन से चारों तीर्थ स्थान अमर और पवित्र हो गये। यहां की पवित्र नदियां भी अमृतमयी हो गई है।

विष्णु द्वारे तीर्थराजे
वन्त्यां गोदावरी तटे।
सुधा बिन्दु विनिक्षेपात
कुम्भपर्वेति-विश्रुतम। ।

अर्थात अमृत बिंदु पतन से पृथ्वी पर चार कुंभ पर्व हरिद्वार, प्रयाग, उज्जैन और नासिक में आयोजित होते हैं। जिसमें हरिद्वार का कुंभ पर्व कुंभ राशि के गुरु, मेष के सूर्व में वैशाख मास में आयोजित होता है। वहीं प्रयाग (इलाहाबाद) का कुंभ महापर्व मेष वा वृषभ का गुरु, मकर का सूर्य और माध मास में सम्पन्न होता है। नासिक में सिंह राशि का गुरु, सिंह का सूर्य तथा श्रावण मास के संयोग से पर्व होता है। इसी प्रकार उज्जैन का कुंभ सिंह राशि का गुरु, वैशाख मास के मेष के सूर्य में कुंभ पर्व होता है। कुंभ भारतीय जनजीवन, संत महात्माओं के आध्यात्मिक चिंतन, जीवन दर्शन और प्राचीन संस्कृति का पुंजीभूत है। इसकी मांगलिक विचारधाराएं सरिताओं के पावन जलप्रवाह के माध्यम से जन जागृति और नवचेतना का शंखनाद सदियों से करती आई है। बारह वर्ष बाद यह पुनः पुनः आ जाता है। प्रयागराज का अमृत महाकुंभ, जो विश्व का सबसे बड़ा मेला पुनीत पावनक गंगा जमुना, और अदृश्य सरस्वती के संगम पर उभरता एक लघु भारत। प्रयाग की धरती से एक बार फिर गूंज रहा है ₹हम एक हैं₹ का अमृत घोष। अजस्त्र वाहिनी गंगा जमुना-सरस्वती का संगम-स्थल। भूमंडल के पूर्व यानी नासिकाग्र (प्रयाग) पर होता है राशि चक्र में कुंभ राशि पर गुरुदेव बृहस्पति के परिभ्रमण पर यह अमृत योग आता है। यह भी गौर करने की बात है कि सभ्यता एवं संस्कृति के विकासमान जीवन और जगत को प्राचीन समय में ही नहीं आज के वैज्ञानिक तकनीकी समय में भी महाकुंभ से संबंधित शहरों एवं निकटवर्ती क्षेत्रों के व्यापार, व्यवसाय, विपणन, वाणिज्य को बल मिलता है। यहां वस्तुओं का राष्ट्रव्यापी विनियम होता है। इन विराट कुंभ मेलों में शास्त्रज्ञों, ज्योतिषियों, विद्वानों, कलाकारों, कवियों का समागम सम्मान होता है, तो दूसरी ओर नाम दान द्वारा अपरिग्रह की भावना को सुंपष्टि दी जाती है। पर्यटन एवं पर्यावरण के महत्व को आत्मसात करने वाले मानव समाज को यात्रा की प्रवृत्ति, उसे एकरस जीवन से हटाकर पाप विमुक्ति तथा ग्रहचक्र एवं दुर्देव से सुरक्षा के भाव जगाता है। इस पावन-महापर्व का आकर्षण ही ऐसा है कि भारत के कोने-कोने से और तो और विश्व के अनेक देशों के लोग भी कुंभ नगरी में सिमटने लगे हैं। कुंभ महापर्व की यह पराकाष्ठा ही है की उत्तरप्रदेश की सरकार ने 12 जनवरी 2025 से आयोजित गंगा किनारे कुंभ स्थल क्षेत्र को कुंभ जिला घोषित कर दिया है। यद्यपि इनकी भाषा, वेशभूषा, रंगढंग सभी एक दूसरे से भिन्न होते हैं, परंतु इनका लक्ष्य एक होता है, मंजिल एक होती है सभी में एक ही भावना और समरसता के दर्शन किये जा सकते हैं और यह हैं अनेकता में एकता का संगम। आज का मनुष्य क्या स्त्री, पुरुष, बाल-अबाल, साधू महात्मा, धन्वान-गरीब, गृहस्थ, संन्यासी, साक्षर असाक्षर हर तरह के लोग और समुदाय, कष्टों समस्याओं की चिंता नहीं करते हुये भी अमृत कुंभ के अमृतपान के लिये सहज एवं प्रसन्नता के साथ प्रत्येक स्थिति में भी उद्यत रहते हैं, यही तो है इस महापर्व का महात्म्य। भारतीय लोक जीवन में मेलों का अपना एक विशेष स्थान रहा है। इस दृष्टि से यदि देखा जाय तो हम पाते हैं कि हमारे देश के लगभग प्रत्येक क्षेत्र में समय-समय पर मेलों का आयोजन होता रहता है। चूंकि ऐसे प्रत्येक आयोजन के लिये कोई कारण होना जरुरी होता है। इसलिए भारत में लगने वाले अधिकांश मेले किसी उत्सव, पर्व या धार्मिक महत्व वाले दिन के अवसर पर आयोजित होते हैं। वैसे इन सभी मेलों का धार्मिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और समाज शास्त्रीय भी महत्व रहता है। लेकिन आधुनिक युग में इनके आयोजन के साथ आर्थिक पक्ष अधिक महत्वपूर्ण होते जा रहे हैं, क्योंकि जहां एक तरफ इनके आयोजन में आयोजक को, सरकार हो या अन्य कोई संस्था, उसे काफी पैसा खर्च करना ही रहता है। दूसरी तरफ इन मेलों में आने वाले भी भारी खर्च करते हैं, और जो व्यापारी, उद्योगपति वा दुकानदार इनमें आते हैं वे अच्छी कमाई के साथ अपने उत्पादन या अपनी वस्तु का अच्छा प्रचार करके भविष्य में बिक्री बढ़ाने का प्रयास भी करते हैं। भारतीय मेलों का एक लम्बा इतिहास रहा है। इनमें अन्य मेलों की अपेक्षा प्रयागराज, हरिद्वार, और नासिक उज्जैन, के महाकुंभ का अपना इतिहास है। साथ ही ये आयोजन देश के विभिन्न भागों में होने वाले मेलो की तुलना में विशाल और लंबे समय तक चलने वाले होते हैं। इस तरह के मेले या महापर्व इन स्थानों पर-प्रतिवर्ष न होकर बारह वर्ष में एक बार आयोजित होते हैं। इस कारण भी ये अधिक बड़े और अधिक महत्वपूर्ण बन गए हैं। सामान्यतः इन चारों मेलों का धार्मिक और ज्योतिष शास्त्रीय महत्व अधिक माना गया है, लेकिन इनके सामाजिक महत्व को भी कम नहीं कहा जा सकता है। वैसे इन चारों कुंभों में साधु-महात्मा बड़ी मात्रा में आते हैं, और अपने अपने मतों का प्रचार प्रसार भी करते हैं। इस तरह कुंभ महापर्व सामाजिक जीवन के परिवर्तन और नियंत्रण की स्थितियों को समझने और उनके संबंध में आवश्यक दिशा निर्देश प्रदान करने के लिए अत्यंत ही उपयोगी सिद्ध होते हैं।

दिल्ली-एनसीआर के लोग आखिर कहां जाएं

–योगेंद्र योगी–

देश की राजधानी दिल्ली का प्रदूषण इतना खतरनाक स्तर तक पहुंच गया है कि केंद्रीय मंत्री नितिन गडकरी दिल्ली आने से घबराते हैं। गडकरी ने कहा कि स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पडऩे से वह दिल्ली आने से कतराते हैं। गडकरी मंत्री हैं। उनके पास साधन और सुविधाएं हैं। वह कहीं भी आसानी से आवागमन कर सकते हैं। सवाल दिल्ली और राष्ट्रीय राजधानी परियोजना क्षेत्र (एनसीआर) के करोड़ों लोगों के जीवन का है। इतने लोग अपना कामकाज, घर-बार छोड़ कर कहां जाएं। प्रदूषण के धीमे जहर को पीना उनकी मजबूरी बन गई है। ज्यादातर सांसदों, मंत्रियों पर अकूत दौलत है। उनके लिए प्रदूषण से बचने के लिए कहीं भी देश में सरकारी खर्च पर आना-जाना आसान है। वैसे भी नेताओं को संसद और विधानसभा को सुचारू चलाने की ज्यादा चिंता नहीं है। दिल्ली और एनसीआर के लोगों को सरकारी मशीनरी और नेताओं के नकारापन का अभिशाप झेलने को मजबूर होना पड़ रहा है। देश की राजधानी होने के बावजूद दिल्ली हर तरह के जानलेवा प्रदूषण की शिकार है। वाहनों और फैक्टरी के धुएं से होने वाला प्रदूषण, यमुना का प्रदूषण और घरों-प्रतिष्ठानों से निकलने वाले कचरे का प्रदूषण। तीनों तरह के प्रदूषण का बोझ उठाने के लिए दिल्ली अभिशप्त हो चुकी है। दिल्ली में केंद्र में भाजपा गठबंधन की और राज्य में आप की सरकार मौजूद हैं। इससे पहले दिल्ली में लंबी अवधि तक कांग्रेस का शासन रहा है। प्रदूषण से निपटने में सभी राजनीतिक दल नाकाम रहे हैं। दिल्ली में कचरे का पहाड़ आज भी नेताओं के दावों-वादों को मुंह चिढ़ा रहा है। हिंदू-मुस्लिम विवाद और भ्रष्टाचार की तरह प्रदूषण नेताओं के लिए कभी चुनावी मुद्दा नहीं बन पाया। जब कभी प्रदूषण का मुद्दा उठता भी है, तो केंद्र और दिल्ली की सरकार गेंद एक-दूसरे के पाले में डाल कर अपनी जिम्मेदारी से बरी हो जाती हैं। यही वजह है कि दिल्ली और एनसीआर की आबोहवा इतनी बिगड़ चुकी है कि सांस लेना भी दूभर हो रहा है। विशेषज्ञों के मुताबिक दिल्ली में रहने वाले कम से कम 10 सिगरेट जितना प्रदूषण हर दिन लेने को विवश हैं। सुप्रीम कोर्ट और राष्ट्रीय हरित प्राधिकरण जैसी संवैधानिक स्वतंत्र संस्थाएं भी तमाम प्रयासों के बावजूद दिल्ली और एनसीआर के प्रदूषण से निपटने में प्रभावी भूमिका अदा नहीं कर सकीं। केंद्रीय मंत्री गडकरी ने अपने बयान में स्वीकार किया था कि दिल्ली में 50 प्रतिशत प्रदूषण वाहनों से निकलता है। गडकरी देश के परिवहन मंत्री हैं। ऐसे में सवाल यही उठता है कि आखिर प्रदूषण की विकराल समस्या से निपटने की जिम्मेदार किसकी है। जब देश का परिवहन मंत्री ही समस्या के समाधान से मुंह चुराने लगे तो अवाम किससे उम्मीद करे। स्विस संगठन की विश्व वायु गुणवत्ता रिपोर्ट 2023 में दिल्ली को सबसे खराब वायु गुणवत्ता वाला राजधानी शहर बताया गया है। रिपोर्ट 2023 के अनुसार, 2023 में 134 देशों में से बांग्लादेश और पाकिस्तान के बाद भारत की वायु गुणवत्ता तीसरी सबसे खराब की भविष्यवाणी की गई। राष्ट्रीय राजधानी को वर्ष 2018 से लगातार चार बार विश्व का सबसे प्रदूषित राजधानी शहर बताया गया है। रिपोर्ट में कहा गया कि अनुमान है कि भारत में 1.36 अरब लोग पीएम 2.5 की सांद्रता का अनुभव करते हैं, जो विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) द्वारा अनुशंसित वार्षिक दिशानिर्देश स्तर 5 माइक्रोग्राम प्रति घन मीटर से अधिक है। दिल्ली और एनसीआर में प्रदूषण से खराब हालात में सुधार करने के लिए सुप्रीम कोर्ट के प्रयास भी सरकारों के नकारापन के कारण बौने साबित हुए हैं। सुप्रीम कोर्ट दर्जनों बार फटकार लगा चुका है। सुप्रीम कोर्ट ने इस मुद्दे पर सुनवाई के दौरान कहा कि कोर्ट कमिश्नरों की रिपोर्ट में चौंकाने वाली जानकारी सामने आई है। अदालत ने कहा कि सरकारी एजेंसियों और दिल्ली पुलिस के बीच समन्वय की कमी है। साथ ही अदालत ने कहा कि दिल्ली में फिलहाल ग्रैप-4 जारी रहेगा। दिल्ली सरकार, एमसीडी, डीपीसीसी, सीएक्यूएम और अन्य अधिकारियों के बीच समन्वय की पूरी तरह से कमी है। समन्वय सुनिश्चित करने की जिम्मेदारी वायु गुणवत्ता प्रबंधन आयोग पर है। इसलिए ग्रैप-4 को लागू करने के लिए समन्वय हो। सुप्रीम कोर्ट ने केंद्र सरकार के साथ-साथ पंजाब और हरियाणा की राज्य सरकारों को फटकार लगाई क्योंकि राज्य प्रदूषण विरोधी उपायों को लागू करने में विफल रहे। यह ऐसे समय में हुआ है जब दिल्ली एनसीआर की वायु गुणवत्ता बहुत खराब बनी हुई है, जिससे सांस संबंधी बीमारियों का खतरा बढ़ गया है। मामले की सुनवाई कर रही शीर्ष अदालत की पीठ ने पंजाब और हरियाणा सरकारों द्वारा खेतों में लगी आग को बुझाने के प्रयासों को मात्र दिखावा करार दिया। हवा की गुणवत्ता खराब होने का एक स्पष्ट कारण पंजाब, हरियाणा और पश्चिमी उत्तर प्रदेश जैसे कृषि प्रधान राज्यों में पराली जलाने की बार-बार होने वाली घटनाएं हैं। सर्वोच्च न्यायालय ने 23 अक्टूबर को पर्यावरण कानूनों को शक्तिहीन बनाने के लिए केंद्र की आलोचना की और कहा कि वायु गुणवत्ता प्रबंधन आयोग (सीएक्यूएम) अधिनियम के तहत पराली जलाने पर दंड से संबंधित प्रावधानों को लागू नहीं किया गया है। मामले की सुनवाई कर रही पीठ ने कहा कि वायु प्रदूषण पर अंकुश लगाने के प्रावधान को लागू करने के लिए कोई आवश्यक तंत्र बनाए बिना ही अधिनियम लागू कर दिया गया। भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान के अनुसार भारत में हर साल पैदा होने वाले 22 मिलियन टन चावल के ठूंठ में से लगभग 14 मिलियन टन पराली को आग के हवाले कर दिया जाता है। यह पैदा होने वाले चावल के ठूंठ का लगभग 63.6 प्रतिशत है और हरियाणा और पंजाब में अकेले जलाई जाने वाली पराली का 48 प्रतिशत हिस्सा है। हालत यह है कि वोटों के डर से राज्य और केंद्र की सरकारें पराली जलाने पर पूरी तरह रोक नहीं लगा पा रही हैं। राजनीतिक दलों के लिए किसानों का वोट बैंक आम लोगों के जीवन पर भारी पड़ रहा है। यही वजह है कि पराली जलाने की हर साल होने वाली घटनाओं के बावजूद कोई भी सरकार सख्त कदम उठाने से हिचकिचाती है। यहां तक कि सरकारें वोटों के लालच में लगातार अदालत के निदेर्शों की अवहेलना कर रही हैं। कुछ दिन पहले हरियाणा सरकार ने कथित तौर पर कैथल जिले में पराली जलाने के आरोप में 18 किसानों को गिरफ्तार किया था। ऐसी गतिविधियों पर लगाम लगाने में विफल रहने के कारण राज्य के कृषि विभाग के करीब 24 अधिकारियों को निलंबित भी किया गया था। गौरतलब है कि हजारों किसान पराली हर साल जलाते हैं।

इसके बावजूद कुछ किसानों की गिरफ्तारी महज दिखावा है। केंद्र सरकार ने 2022 में पंजाब, हरियाणा, उत्तर प्रदेश और दिल्ली एनसीआर राज्यों में फसल अवशेषों के इन-सीटू प्रबंधन के लिए कृषि यंत्रीकरण को बढ़ावा देने की योजना शुरू की। पंजाब को पराली जलाने की समस्या से निपटने के लिए 2018-22 के दौरान इस योजना के तहत 1387.6 करोड़ रुपए से अधिक मिले।

राष्ट्रीय हरित अधिकरण (एनजीटी) ने 22 अक्टूबर को पंजाब सरकार को निर्देश दिया कि वह बताए कि राज्य में धान की पराली जलाने पर रोक लगाने के लिए उसने क्या कदम उठाए हैं। सुप्रीम कोर्ट और एनजीटी के लगातार प्रयासों के बावजूद प्रदूषण से बिगड़े हालात में ज्यादा सुधार नहीं हुआ है। दरअसल नौकरशाह नेताओं के इशारों पर काम करते हैं। नेता वोट के कारण किसानों के खिलाफ कठोर कार्रवाई करने से कतराते हैं। यह निश्चित है कि विश्व में प्रदूषण को लेकर बदनाम हो चुकी राजधानी के हालात सुधारने के लिए जब तक अदालतें नौकरशाहों के खिलाफ कठोर कार्रवाई नहीं करेंगी, तब तक इनकी प्रवृत्ति में सुधार संभव नहीं है। दिल्ली की गंदी होती सांसों को स्वच्छ बनाने की जरूरत है।

(स्वतंत्र लेखक)

भारतीय कृषि के भविष्य को आकार देने की आवश्यकता

–निमिषा सिंह–

आज भारत की अर्थव्यवस्था विश्व की पाँच सबसे मजबूत अर्थव्यवस्थाओं में से एक है। भारतीय सेना विश्व की सबसे ताकतवर सेनाओं में सम्मिलित है। विश्व के सफलतम अंतरिक्ष कार्यक्रमों में भारत का अंतरिक्ष कार्यक्रम शामिल है। अन्य क्षेत्रों में भी भारत नियमित रूप से विकास की नई बुलंदियां छू रहा है बावजूद इसके भारत में एक क्षेत्र ऐसा भी है जो आज भी विकास की दौड़ में कहीं पीछे रह गया है। खाद्य सुरक्षा, ग्रामीण रोजगार जैसे क्षेत्रों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाला कृषि क्षेत्र आज भी उस स्थिति में नहीं पहुँच पाया है जिसे संतोषजनक माना जा सके। इसका परिणाम यह हुआ है कि कृषि पर निर्भर देश के करोड़ों लोग आज भी बेहद अभावों में जीवन जीने को विवश हैं और कई बार ये कृषि के माध्यम से अपनी बुनियादी जरूरतें भी नहीं पूरी कर पाते हैं।

किसान समुदाय को सशक्त बनाने नवाचारों का अन्वेषण और भारतीय कृषि के भविष्य को आकार देने के लिए तेलंगाना की राजधानी हैदराबाद स्थित फेडरेशन ऑफ तेलंगाना चैंबर एंड कॉमर्स में दो दिवसीय राष्ट्रीय किसान सम्मेलन का आयोजन हुआ। जिसमें कृषि क्षेत्र में क्रांति लाने के उद्देश्य से व्यावहारिक चर्चा करने के लिए देश भर से किसान नेता, कृषि वैज्ञानिक, सामाजिक कार्यकर्ता और प्रगतिशील किसान एक मंच पर एकत्रित हुए। सिफा के संस्थापक और मुख्य सलाहकार पी. चेंगल रेड्डी के अनुसार भारत में खाद्य सुरक्षा और इस क्षेत्र में वैश्विक निर्यातक बनने की दिशा में महत्वपूर्ण प्रगति के अवसर हैं। आज जलवायु परिवर्तन को ध्यान रखकर खेती करने और युवा प्रतिभाओं को खेती की ओर आकर्षित करने की महत्वपूर्ण आवश्यकता है। विशेष रूप से खाद्य प्रसंस्करण और कृषि निर्यात के क्षेत्रों में भी अपार अवसरों की उपलब्धता है, जिन्हें सही ढंग से क्रियान्वित किया जाना चाहिए।

भारतीय किसान संघ परिसंघ के मौजूदा चेयरमैन रघुनाथ दादा पाटील ने देश भर से आए किसान नेताओं और प्रतिनिधियों से कहा कि इसमें कोई शक नहीं कि कृषि भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ है और किसान इसकी जीवनरेखा हैं। किसान सबसे बड़ा उत्पादक और उपभोक्ता दोनों है। किसानों और वैज्ञानिकों के बीच अंतर को पाटने के लिए 'प्रयोगशाला को भूमि' से जोड़ने के प्रयासों की भी महती आवश्यकता है ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि अत्याधुनिक अनुसंधान जमीनी स्तर तक पहुंचे। कृषि में विविधता लाने के लिए किसानों को गेहूं और धान जैसी पारंपरिक फसलों के साथ-साथ मछली पालन, मधुमक्खी पालन और हाइड्रोपोनिक्स जैसे विकल्पों को भी अपनाना चाहिए। सम्मेलन में न्यूनतम समर्थन मूल्य समेत सतत कृषि के लिए नीतिगत पहल और योजनाओं, निर्यात नीति पर विस्तृत चर्चा की गई। पीजेंट वेलफेयर एसोसिएशन के चेयरमैन अशोक बालियान ने कहा कि भारत सरकार ने 2018 में एसेंसिल कमोडिटी एक्ट की पावर को एक्सरसाइज करते हुए चीनी का न्यूनतम बिक्री मूल्य तय किया था। ठीक उसी तरह केंद्र सरकार 23 फसलों पर भी एसेंशियल कमोडिटी एक्ट के पावर को एक्सरसाइज करते हुए न्यूनतम बिक्री मूल्य तय कर सकती है ताकि इससे नीचे सौदे न हो सके। साथ ही आवश्यक है कि यह पूरे देश में लागू हो तभी यह कारगर हो सकेगा। बिहार की निमिषा सिंह ने राज्य में मंडी व्यवस्था को पुनः बहाल कराए जाने की बात कही। झारखंड की सुष्मिता सोरेन ने जल संकट पर चिंता जताई। जमीन होने के बावजूद जल की कमी की वजह से वहां खेती नहीं हो पा रही है। फसल बीमा का फायदा भी झारखंड के किसानों को ढंग से नहीं मिल पा रहा है। कृषि में सोलर ऊर्जा की भूमिका, पशुओं से फसल को होने वाले नुकसान और फसल बीमा जैसे विषयों पर भी चर्चा हुई। सिफा की बैठक में ह्यूमेन फाउंडेशन फॉर पीपल एंड एनिमल्स (एचएफपीए) जिनमें श्री मार्कस कैम्पोस और श्री राजगोपाल रेड्डी भी शामिल थे। उन्होंने किसानों को उनके संवैधानिक अधिकारों और उनकी रक्षा के लिए सरकार के कानूनी आदेश के बारे में बताया। उन्होंने उन्हें यह भी बताया कि वन्यजीव संरक्षण अधिनियम अनुच्छेद 21 आवश्यकता पड़ने पर वन्यजीवों से नागरिकों के जीवन और आजीविका के अधिकार की रक्षा करता है। जंगली सूअर, नीलगाय आदि जैसे फसल पर हमला करने वाले जानवरों के लिए मुख्य वन्यजीव अधिकारी अपनी शक्तियों को सरपंच को सौंप सकता है, जो तब पंजीकृत शूटरों को एक निश्चित समय अवधि के भीतर जानवरों को मारने के लिए बुला सकता है। किसान सर्विस ऑर्गेनाइजेशन से जुड़े सोलर ऊर्जा विशेषज्ञ गणधम श्रीनिवास राव ने बताया कि किस प्रकार उनके और उनके सहकर्मी वेणुगोपाल और पी. चेंगल रेड्डी के अनुरोधों, अभ्यावेदनों और लगातार अनुवर्ती कार्रवाई के बाद हाल ही में ऊर्जा मंत्रालय ने हाई टेंशन ट्रांसमिशन लाइनों के लिए मानक संचालन प्रक्रिया जारी की है। टावर बेस एरिया को भूमि मूल्य का 200 प्रतिशत मुआवजा दिया जाएगा। टावर के चार ग्राउंड-लेवल लेग और प्रत्येक तरफ एक अतिरिक्त मीटर विस्तार से घिरा स्थान टावर बेस एरिया के रूप में जाना जाता है। दिशा-निर्देशों के अनुसार, जिला कलेक्टर, जिला मजिस्ट्रेट या डिप्टी कमिश्नर को मुआवजे के लिए अंतिम अधिकार दिया जाएगा। मुआवजे पर निर्णय लेने से पहले, हम अनुरोध करेंगे कि जिला कलेक्टर नवीनतम (14 जून 2024 को बिजली मंत्रालय के दिशा-निर्देश) दिशा-निदेर्शों पर विचार करें। दूसरे दिन के अंतिम सत्र में सिफा के मुख्य सलाहकार पी. चेंगल रेड्डी के मार्गदर्शन में सर्वसम्मत प्रस्ताव द्वारा सिफा की नई संगठन कार्यकारी समिति और प्रशासनिक टीम का गठन किया गया। महाराष्ट्र से रघुनाथ दादा पाटील को चेयरमैन और गुजरात के विपिन चंद्र पटेल को राष्ट्रीय अध्यक्ष की जिम्मेदारी सौंपी गई वहीं झारखंड दुमका से ताल्लुक रखने वाली सुष्मिता सोरेन, उत्तर प्रदेश से अशोक बालियान और तेलंगाना से मारा गंगा रेड्डी को राष्ट्रीय उपाध्यक्ष का पद भार सौंपा गया। राष्ट्रीय किसान सम्मेलन में भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए कर्नाटक से शंकर नारायण रेड्डी, गुजरात से बिपिन भाई पटेल, तमिलनाडु से आर व्ही गिरी, आंध्र प्रदेश से कोटी रेड्डी नरेंद्र बाबू, तेलंगाना से गोपाळ रेड्डी, निमू वसंता, माधव रेड्डी, सोमशेखर राव, उत्तर प्रदेश से अशोक बालियान, धर्मेंद्र मलिक, झारखंड से सुस्मिता सोरेन, बिहार से निमिषा सिंह, पंजाब से दलजीत कौर, तमिलनाडु से गुरूसामी धरमार, दिल्ली से कोटी रेड्डी, हरियाणा से सेवा सिंग आर्य, छत्तीसगढ़ से पारसनाथ साहू , कर्नाटक से बी.एम.हंसी, उड़ीसा से समीर साहू, महाराष्ट्र से शिवाजी नांदखिले के अलावा देश भर से आए किसान नेताओं ने कई विशेष मुद्दे जैसे न्यूनतम समर्थन मूल्य से नीचे कृषि उपज न बिके, इसका प्रावधान करना, मुख्य फसलों, मुख्य फल-सब्जी, दूध व शहद आदि को न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) के दायरे में लाने, जल प्रबंध, कृषि सुधार, बाजार हस्तक्षेप योजना को प्रभावी बनाने, औसत बाजार भाव और लक्षित भाव के बीच जो अंतर हो, उस राशि यानि बाजार में हानि का भुगतान (मार्केट लॉस पेमेंट) किसानों को डीबीडी के माध्यम से किया जाए व कृषि को संविधान की समवर्ती सूची में रखने, कृषि को उद्योग का दर्जा देने के मामलों पर चर्चा की। अब इन सभी मांगों के साथ एक ज्ञापन कृषि मंत्रालय को सौंपा जाएगा। .

एक नजर

पुलिस वारंटी पकड़ किया न्यायालय समक्ष पेश

नवयुग समाचार संवाददाता

चौबेपुर पुलिस ने एक वारंटी को दबोच कर न्यायालय में पेश किया। पुलिस आयुक्त कानपुर कमिश्नरेट द्वारा अपराधो की रोकथाम एवम अपराधियों की धर पकड़ व अवेध असलाह रखने में संलिप्त और वारंटीयो व जिला बदर अपराधियों के खिलाफ चलाए जा रहे अभियान के तहत गुरुवार को चौबेपुर पुलिस ने मुखबिर की सटीक सूचना पर मुकदमा अपराध संख्या 215/16 अपराध संख्या 542/15 धारा 138 एसआई एक्ट के एक वारंटी धर्म सिंह पुत्र रघुवीर सिंह उम्र 50 वर्ष निवासी पुरागुन्नु को पुलिस दबोच लिया जिसे न्यायालय समक्ष पेश किया गया।

कल्याणपुर थाने में 18 दिसंबर को होगी वाहनों की नीलामी

नवयुग समाचार संवाददाता

चौबेपुर।कल्याणपुर थाने में 18 दिसंबर 2024 को मुकदमाती व लावारिस वाहनों को नीलामी की जाएगी।

पुलिस आयुक्त द्वारा चलाए जा रहे अभियान ऑपरेशन क्लीन से संबंधित मुकदमाती/207 एमबी एक्ट।लावारिस वाहनों के निस्तारण के संबंध में प्राप्त निदेर्शों के अनुपालन में कार्यवाही पूरी करने के बाद न्यायालय ए सी जे एम कोर्ट नंबर 2 एवम विशेष कार्यपालक मजिस्ट्रेट कानपुर नगर से नीलामी के संबंध में आदेश मिला जिसके बाद जिलाधिकारी द्वारा वाहनों की नीलामी हेतु एक कमेटी का गठन किया गया जिसमे अपर नगर मजिस्ट्रेट कानपुर नगर,सहायक पुलिस आयुक्त कल्याणपुर सयुक्त निदेशक अभियोजन अधिकारी कानपुर नगर व सभागीय परिवहन अधिकारी कानपुर नगर को नियुक्त किया गया।जिनकी उपस्तिथि में 18 दिसंबर 2024 को 215 वाहनों की नीलामी की जाएगी इच्छुक व्यक्ति थाना कल्याणपुर कानपुर नगर पर जाकर इसमें भाग ले सकते है।

वंदीमाता रोड के चौड़ीकरण और सौंद्रीकरण को मिली मंजूरी

नवयुग समाचार संवाददाता

चौबेपुर विकास खण्ड की बंदीमाता रोड के चौड़ीकरण और सौंद्रीकरण के लिय सरकार की तरफ से मजूरी मिल गई है।

चौबेपुर की बंदीमाता रोड जो कि अपनी दुर्दशा पर सालो से रो रही है जिससे वहा से निकले वाले हजारों लोगो को काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ता है लेकिन अब इन सब परेशानियों से स्थानीय लोगो को निजात मिलने वाली है क्योंकि मिश्रित लोकसभा सांसद अशोक रावत ने इस समस्या से सरकार को रूबरू कराया है जिससे सरकार ने बंदीमाता रोड के चौड़ीकरण और सौंद्रीकरण करवाने की मंजूरी दे दी है जिसका कार्य बहुत जल्द आरंभ किया जाएगा।

केयरटेकरों की समस्याओं को लेकर धरना प्रदर्शन जारी

कैलाश नाथ तिवारी/ नवयुग समाचार

अम्बेडकरनगर। जिला कलेक्ट्रेट के सामने डॉक्टर भीमराव अंबेडकर मूर्ति के नीचे अनिश्चितकालीन तक अपनी समस्याओं को लेकर केयर टेकरों का धरना प्रदर्शन जारी है। इनका कहना है कोई भी प्रशासनिक अधिकारी एवम कर्मचारी समस्याओं की सुनवाई नही कर रहा।

जिलाअध्यक्ष श्रीमती निशा देवी द्वारा राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन के तहत नियुक्ति केयर टेकरों का मानदेय व्यक्तिगत खाते में दिए जाने के संबंध में श्रीमान जिला अधिकारी महोदय को एक ज्ञापन पत्र सौपा गया। उक्त संबंध में अध्यक्ष महोदय का कहना है कि इस धरना प्रदर्शन में यदि किसी केयर टेकरों के साथ कोई अनहोनी घटना घटित होती है तो सारी जिम्मेदारी जिलाधिकारी महोदय , मुख्यविकास अधिकारी महोदय, एन.आर.एल.एम. महोदय तथा प्रशासनिक अधिकारियों की होगी।

जादू टोने में फसाकर लूट लिए पांच लाख के जेवर

शिवकुमार नवयुग समाचार

शिवराजपुर थाना क्षेत्र स्थित राधन गांव निवासी उदयनरायण पुत्र त्रिमोहन बहेलिया ब्रस्पतिवार को करीब दोपर 2 बजे अपने घर से बिल्हौर स्थित सुनील कोल्ड स्टोर आलू लेने गए थे आलू लेकर वो वापस अपने घर आ रहे थे तभी रास्ते में दो व्यक्तियों ने उन्हें रोक लिया और बोले हम ब्राह्मण है और हरिद्वार से आए है हरिद्वार से मेरे गुरु ने हमको आपके पास भेजा है और कहा है की आप पे बहुत बड़ा संकट आने वाला है इसके बाद उदयनारायण घबरा गया। उसके बाद उन दोनो ने बताया कि आपके चार लड़के है और एक लड़की है वो भी बीमार रहती है ये बात उदय नारायण को सही लगी उसके बाद उदय नारायण ने उपाय पूछा तो उन दोनो ने कहा की आप घर में जितनी भी सोने की चीजे हो उनको लेकर शिवराजपुर के पास बने खेरेश्वर मंदिर में जाकर चढ़ा देना और 100 रुपए का प्रसाद लेकर चढ़ा देना जेवर अपना वापस ले लेना ये सब नही करोगे तो आपके एक बेटे का कल एक्सीडेंट हो जाए गा और लड़की जो बीमार रहती है वो भी मार जायेगी ये सुन कर उदय नारायण घबरा गया और उनके कहने के अनुसार चलने लगा उसके बाद उन लोगो ने कहा हम आपके साथ चल रहे है उसके बाद वो दोनो गांव के बाहर ही रुक गए और उदय नारायण को जेवर लाने को भेज दिया उसके बाद तीनो लोग मंदिर जाने लगे तभी रास्ते में प्यारेपुर और मुंहपोछा गांव के बीच में काफी सुनसान जगह रहती है उन लोगो ने फिर उसी जगह गाड़ी खड़ी कर उदय नारायण को पीटने लगे वा उनके करीब पांच लाख के जेवर वा एक हजार रुपए और एक कीपैड मोबाइल लेके वहा से भाग निकले। उदय नारायण को जब पता चला की उनके साथ धोखा हो गया तो वो तुरंत ही घर में खबर की तो घर वाले घबरा गए वो तुरंत ही शिवराजपुर थाने पहुंच कर तहरीर देकर कार्यवाही की मांग की तहरीर मिलते ही पुलिस ने जांच पड़ताल शुरू कर दिया

मिनटों में चमकेगा बाथरूम, अपनाएं ये असदार घरेलू टिप्स

पूरे घर में बाथरूम ही एक ऐसा हिस्सा हैं, जहां साफ-सफाई की सबसे ज्यादा जरूरत होती है क्योंकि पानी के ज्यादा इस्तेमाल की वजह से वहां चिकनाई और कालिख जमा हो जाती हैं जिससे फर्श और, दीवारे दोनों ही गंदी लगती है। बाथरूम, बाथटब, वॉश बेसिन, वॉटर टेप, फर्श पर पड़े पीले धब्बे, जंग और पानी से पड़ने वाले सफेद दाग-धब्बों को मिटाना। इन भद्दे दिखने वाले धब्बों को न हटाया जाएं तो पूरा घर गंदा और मेला-मेला सा लगता है हालांकि इन्हें हटाने के लिए बाजार में बहुत सारे प्रॉडक्ट्स उपलब्ध हैं लेकिन इन महंगे प्रॉडक्ट्स के इस्तेमाल से भी यह जिद्दी धाग साफ नहीं होते। घर पर अचानक कोई मेहमान आ जाएं तो गंदे बाथरूम पर पड़े निशानों को देखकर खुद को बड़ी शर्मिंदगी महसूस होने लगती है। *बाथरूम में रखें सामान को यूं चमकाएं

-टूथब्रश को साफ और कीटाणुरहित करने के लिए इसे एक घंटे तक सिरके में भिगो कर रखें। बाद में इसे अच्छी तरह पानी से धो लें। बर्तन और बाथरूम टेप व फर्श साफ करने के लिए आप स्पंज का इस्तेमाल करते हैं। स्पंज को भी इसी तरह से भिगोकर रखें और साफ कर लें।

-बाथटब से पानी के सफेद दाग और जंग के निशान दूर करने के लिए हाइड्रोजन पेरोक्साइड का इस्तेमाल करें। दाग-धब्बों वाली जगह पर हाइड्रोजन स्प्रे छिड़कें और 30 से 45 मिनटों के लिए ऐसा ही छोड़ दें। उसके बाद गर्म पानी से धो लें।

-बाथटब के सिंक या किचन सिंक को चमकाने के लिए उस पर सोडा

(वॉटर सोडा) डालें। कुछ मिनटों के बाद उस पर सिरका डालें और ब्रश के साथ अच्छे से रगड़कर और गर्म पानी डालें। सिंक चमक उठेगा। फर्श पर कहीं जंग लगा हो तो यही तरीका अपनाएं। -साइट्रिक एसिड भी पीले दागों को हटाने में कारगर साबित होता है। खुरदुरे शक्कर के दानों जैसा दिखने वाला ये एसिड आपको बाजार में आसानी से मिल जाएगा और यह ज्यादा महंगा भी नहीं है। एक कप पानी में एक पैकेट साइट्रिक एसिड घोलें और इस घोल को स्पंज की मदद से पीले धब्बों पर 20 मिनट लगा रहने दें और बाद में गर्म पानी से उस जगह को धो लें।

*बाथरूम टाइल्स को यूं चमकाएं

-आधा लीटर गर्म पानी में 15 ग्राम साइट्रिक एसिड घोल तैयार करके टाइल्स को साफ करें। फिर साफ पानी से इसे साफ करें। -टाइल्स पर सिरके का स्प्रे करें। 10 मिनट ऐसे ही रहने दें और बाद में साफ पानी से इसे धो लें। इसे चमकाने के लिए सॉफ्ट कपड़े से टाइलों को पोंछे। *कोने से कैसे साफ करें टाइल्स

-टाइल्स के बीच फंसी मिट्टी, काले-धब्बों को साफ करने के लिए सफेद पैराफिन मोमबत्ती का इस्तेमाल करें। मोमबत्ती की कुंद को टाइल्स की लाइनों पर रगड़ें। -बेकिंग सोडे को टूथब्रश की मदद से टाइलों के कौनों पर रगड़ें। बाद में टाइल्स को गर्म पानी से धो लें। फर्श और दीवारें एक बार फिर चमकने लगेंगे।

-गर्म पानी में हाइड्रोजन पेरोक्साइड मिलाएं। टाइलों के कोने पर घोल डालें और स्पंज या ब्रश के साथ रगड़ें। बाद में साफ पानी से धो लें। *टॉयलेट बाउल से दाग धब्बे हटाने के लिए

टॉयलेट बाउल क्लीन करने के लिए सरसो पाउडर और साइट्रिक एसिड (बराबर) मिक्स करके डालें। इसके अलावा टायलेट बाउल को साफ करने और बदबू को दूर करने के लिए इस तरीके को अपनाएं।

-1 कप बेकिंग सोडा
-1/4 कप साइट्रिक एसिड
-1/2 टीस्पून सिरका
-1 टीस्पून 6त्न हाइड्रोजन पेरोक्साइड
-15ङ्क20 बूंदें आपका मनपसंद तेल एक कटोरे में बेकिंग सोडा और साइट्रिक एसिड को मिलाएं। दूसरे कटोरे में सिरका और हाइड्रोजन पेरोक्साइड मिक्स करें। फिर सूखे मिश्रण में तरल घोल बूंद-बूंद करके डालें। साथ ही तेल मिक्स करके उस मिश्रण को छोटी- छोटी गेंदों का रूप दें। टायलेट बाउल साफ करने से पहले इस गेंद को बाउल में 6 घंटें तक पड़ा रहने दें। बाद में ब्रश से साफ कर लें। आप इस सामग्री को काचं के जार में सुरक्षित करके रख सकते हैं।

प्रभु राम के मंदिर में विराजमान होने की पहली वर्षगांठ पर मनेगा महा उत्सव

-तीन दिवसीय प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव की तैयारी शुरू

अयोध्या, अयोध्या में एक बार फिर महा उत्सव की तैयारी हो रही है। यह महा उत्सव प्रभु राम के मंदिर में एक साल विराजमान होने के मौके पर मनाया जाएगा। राम मंदिर ट्रस्ट प्रभु राम के पहले वर्षगांठ को ऐतिहासिक और भव्य बनाने की तैयारी में जुट गया है। अगले साल 11 जनवरी 2025 को पौष माह की द्वितीया तिथि पड़ रही है। इस तिथि के दिन साल 2024 में प्रभु राम मंदिर में विराजमान हुए थे, जिसके बाद अब 10-11 और 12 जनवरी इन तीन दिनों तक अयोध्या में प्रभु राम के विराजमान होने की पहली वर्षगांठ मनाई जाएगी। ऐसे में तीन दिवसीय प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव की तैयारी की गई है, जो

एक दिन पहले शुरू होगा और एक दिन बाद तक चलेगा। ऐसे में 10 जनवरी से प्राण प्रतिष्ठम महोत्सव के वार्षिक उत्सव शुरू किया जाएगा, जिसमें रामाचा का पाठ वेद का पारायण रामचरितमानस का पाठ यज्ञ अलग-अलग तरीके के धार्मिक अनुष्ठान किए जाएंगे।

इस तीन दिवसीय महा उत्सव में आम श्रद्धालु भी शामिल हो। इस पर राम मंदिर ट्रस्ट विचार विमर्श भी कर रहा है। राम मंदिर ट्रस्ट के सदस्य स्वामी वासुदेवानंद सरस्वती ने बताया कि पहली वर्षगांठ को राम मंदिर ट्रस्ट प्रतिष्ठा द्वादशी के रूप में मनाएगा। इसके लिए तीन दिवसीय कार्यक्रम का आयोजन किया जाएगा, जिसमें कई प्रकार के धार्मिक अनुष्ठान भी होंगे। जहां तीन दिनों तक यज्ञ होगा साथ ही वेद पाठ और रामचरितमानस का पाठ होगा। जहां प्रभु राम का अभिषेक किया जाएगा।

पुलिस अधीक्षक उन्नाव दीपक भूकर द्वारा शुक्रवार की साप्ताहिक परेड की सलामी ली गयी तथा परेड का निरीक्षण किया गया

मोहम्मद इरफान खान/नवयुग समाचार

उन्नावः पुलिस अधीक्षक उन्नाव, दीपक भूकर द्वारा शुक्रवार की साप्ताहिक परेड की सलामी ली गयी तथा परेड का निरीक्षण किया गया। परेड में पुलिस लाइन का पुलिस बल तथा विभिन्न कार्यालयों एवं थानों में नियुक्त पुलिसकर्मी सम्मिलित हुए। परेड निरीक्षण के उपरान्त महोदय द्वारा शस्त्र निरीक्षण, पुलिस लाइन परिसर, क्वार्टर गार्द, कार्यालय डायल 112, परिवहन शाखा एवं पीआरवी, गार्द रजिस्टर आदि का निरीक्षण कर सम्बंधित को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए गए। इस दौरान क्षेत्राधिकारी सफीपुर , प्रशिक्षु क्षेत्राधिकारी व प्रतिसार निरीक्षक मौजूद रहें ।

क्या है त्रिपुंड और क्यों करते हैं इसे धारण

संजय त्रिपाठी
प्रबंध संपादक
नवयुग समाचार (दैनिक)

ललाट अर्थात माथे पर भस्म या चंदन से तीन रेखाएं बनाई जाती हैं उसे त्रिपुंड कहते हैं। हथेली पर चन्दन या भस्म को रखकर तीन उंगुलियों की मदद से माथे पर त्रिपुण्ड को लगाई जाती है। इन तीन रेखाओं में 27 देवताओं का वास होता है। यानी प्रत्येक रेखाओं में 9 देवताओं का वास होता हैं।

विज्ञान की नजर में त्रिपुंड

शिव पुराण के अनुसार जो व्यक्ति नियमित अपने माथे पर भस्म से त्रिपुण्ड यानी तीन रेखाएं सिर के एक सिरे से दूसरे सिरे तक धारण करता है उसके सभी पाप नष्ट हो जाते हैं और व्यक्ति शिव कृपा का पात्र बन जाता है।

विज्ञान ने त्रिपुंड को लगाने या धारण करने के अनेक लाभ बताएं हैं। विज्ञान कहता है कि त्रिपुंड चंदन या भस्म से लगाया जाता है। चंदन और भस्म माथे को शीतलता प्रदान करता है। अधिक मानसिक श्रम करने से विचारक केंद्र में पीड़ा होने लगती है। ऐसे में त्रिपुण्ड ज्ञान-तंतुओं को शीतलता प्रदान करता है।

त्रिपुंड धारण करने के तरीके

यह विचार मन में न रखें कि त्रिपुण्ड केवल माथे पर ही लगाया जाता है। त्रिपुंड हमारे शरीर के कुल 32 अंगों पर लगाया जाता है। इन अंगों में मस्तक, ललाट, दोनों कान, दोनों नेत्र, दोनों कोहनी, दोनों कलाई, हृदय, दोनों पाश्र्व भाग,

नाभि, दोनों अण्डकोष, दोनों अरु, दोनों गुल्फ, दोनों घुटने, दोनों पिंडली और दोनों पैर शामिल हैं। इनमें अग्नि, जल, पृथ्वी, वायु, दस दिक्प्रदेश, दस दिक्पाल और आठ वसुओं वास करते हैं। सभी अंगों का नाम लेकर इनके उचित स्थानों में ही त्रिपुंड लगना उचित होता है।

सभी अंगों पर अलग-अलग देवताओं का वास होता है। जैसे- मस्तक में शिव, केश में चंद्रमा, दोनों कानों में रुद्र और ब्रह्मा, मुख में गणेश, दोनों भुजाओं में विष्णु और लक्ष्मी, हृदय में शंभू, नाभि में प्रजापति, दोनों उरुओं में नाग और नागकन्याएं, दोनों घुटनों में ऋषिकन्याएं, दोनों पैरों में समुद्र और विशाल पुष्ठभाग में सभी तीर्थ देवता रूप में रहते हैं।

भस्म जली हुई वस्तुओं का राख होता है। लेकिन सभी राख भस्म के रूप में प्रयोग करने योग्य नहीं होता है। भस्म के तौर पर उन्हीं राख का प्रयोग करना चाहिए जो पवित्र कार्य के लिए किये गये हवन अथवा यज्ञ से प्राप्त हो। (संकलित)

कानपुर में एसीपी ने किया आई आई टी छात्रा से रेप : सीपी ने दिए एफ आई आर के आदेश

- पद से हटाए गए आरोपी पुलिस अधिकारी एसीपी मोहसिन खान

सुनील बाजपेई/नवयुग समाचार

कानपुर। महिलाओं के उत्पीड़न और शोषण करने के मामले में कानून के रखवाले कहे जाने वाले पुलिस वाले भी पीछे नहीं है। ऐसा ही प्रकाश में आया एक मामला यहां पुलिस विभाग में भी चर्चा का विषय बना हुआ है। जिसके मुताबिक एक पुलिस अधिकारी ने आईआईटी की छात्रा के साथ बलात्कार कर डाला। आरोपों की जांच कराने से घटना की सच्चाई सामने आने के बाद पुलिस कमिश्नर अखिल कुमार ने एसीपी अनवरगंज मोहसिन खान के खिलाफ एफआईआर दर्ज करने के आदेश दिए हैं।

जांच के लिए पहुंची डीपी और एसीपी को पीड़िता ने बताया कलेक्टरगंज एसीपी मोहसिन खान आई आई टी से साइबर क्राइम और क्रिमिनोलॉजी की पढ़ाई कर रहे हैं। वहां रिसर्च स्कॉलर से नजदीकी बढ़ गई और प्यार में फंसाने में सफल होने के बाद उससे बलात्कार किया। इसी दौरान जब पीड़िता के सामने एसीपी के शादीशुदा होने के साथ अन्य सच्चाई सामने आ ई तो उसने कानपुर पुलिस कमिश्नर से शिकायत की। उनके आदेश आज गुरुवार को डीसीपी साउथ अंकित शर्मा और एसीपी अर्चना सिंह ने सिविल ड्रेस में दो घंटे बंद कमरे में पीड़िता से पूछताछ की। जिसमें एसीपी पर लगाया गया उसका आरोप सही पाया गया। फिलहाल एसीपी को उसके पद से हटाने के साथी पुलिस कमिश्नर अखिल कुमार ने आरोपी एसीपी के खिलाफ बलात्कार समेत और गंभीर धाराओं में रिपोर्ट दर्ज करने के आदेश दिए हैं। घटना पुलिस महकमे में में भी चर्चा का विषय बनी हुई है।

सिल्ट सफाई के नाम पर सिर्फ खानापूर्ति

सुरजीत कश्यप नवयुग समाचार

बिल्हौर: प्रशासनिक लापरवाही व भ्रष्टाचार की वजह से क्षेत्र के रजबहों में सिल्ट सफाई के नाम पर सिर्फ खानापूर्ति की जा रही है। ताजा मामला ककवन विकास खण्ड के औरींताहरपुर माइनर का है जहाँ पर ठेकेदार द्वारा अधूरी सफाई छोड़ दी गई तथा माइनर में जब पानी छोड़ा गया तो सिल्ट के अवरोध की वजह से लहरियापुर गाँव में आसपास के कई किसानों की फसलें जलमग्न होकर खराब हो गईं हैं। यहाँ अवगत कराना है कि क्षेत्र से गुजरे लगभग सभी रजबहों में सिल्ट सफाई की सिर्फ औपचारिकता भर की गई है। रजबहे उसी तरह से चोक हैं।

स्थानीय प्रशासन आँख बंदकर बैठा रहता है। बिना किसी नुकसान व शिकायत के गुणवत्ता चेकिंग आदि कुछ नहीं किया जाता है। ग्रामीण गोविंद कश्यप आदि की सूचना पर जब ककवन ब्लॉक प्रमुख प्रतिनिधि विनय यादव पहुँचे तो उन्होंने इस स्थिति को उपजिलाधिकारी बिल्हौर को इस घटना से अवगत कराया तथा किसानों के हुए नुकसान के लिए सरकारी मदद दिलाने को कहा व ग्रामीणों ने बातया चाठिन से हीरा निवादा तक नहर साफ ही नही हो पायी पानी छोड़ दिया गया आस पास के 100 बीघा से ज्यादा किसानो का नुकसान हो गया गेहूं और आलू की फसल मे पानी भर गया उन्होंने सभी रजबहों की सफाई गुणवत्ता की जाँच कराने का भी आग्रह किया है। इस शिकायत पर उपजिलाधिकारी रश्मि लांबा ने नायब तहसीलदर को मौके का निरीक्षण कर रिपोर्ट प्रस्तुत करने का आदेश दिया है।

पुलिस की वर्दी पहन वाहन चालकों से वसूली करने वाला फर्जी सिपाही गिरफ्तार

मोहम्मद इरफान खान/नवयुग समाचार

उन्नाव।पुलिस अधीक्षक जनपद उन्नाव के कुशल निर्देशन एवं अपर पुलिस अधीक्षक उत्तरी उन्नाव व क्षेत्राधिकारी बीघापुर के कुशल पर्यवेक्षण में अपराध एवं अपराधियों के विरूद्ध चलाये जा रहे अभियान के क्रम में थाना बीघापुर पुलिस द्वारा वाहन चालकों से अवैध वसूली करने वाले फर्जी सिपाही को गिरफ्तार किया गया।

आज दिनांक 12.12.2024 को थाना बीघापुर पुलिस द्वारा अवैध रूप से पुलिस की वर्दी पहने हुए वाहन चालको से वसूली करते हुए अभियुक्त शिव बक्स पुत्र वंश बहादुर उम्र करीब 26 वर्ष निवासी

ग्राम निवाजीखेड़ा पोस्ट विजयमऊ थाना सरेनी जनपद रायबरेली को ओमप्रकाश की दुकान के पास कस्बा बीघापुर से गिरफ्तार किया गया।

अभियुक्त के कब्जे से एक अदद टेरीकाट की पैंट, अंगोला शर्ट व उत्तर प्रदेश पुलिस लिखी हुई मोनोग्राम लगी हुई पुलिस जैकेट व काले रंग के जूते, लाल बेल्ट एवं चपलास तथा बैरट कैप एवं एक अदद पीतल का ताज तथा एक अदद जाली आइडेंटी कार्ड हस्ताक्षर युक्त तथा एक अदद रोहित सिंह नाम की नेम प्लेट अंग्रेजी व हिंदी में लिखा है व उत्तर प्रदेश पुलिस के एक जोड़ी बैज तथा एक अदद सीटी डोरी व 7300 रुपए नकद (100-100 के 73 नोट) व एक अदद मोटरसाइकिल पैशन प्रो नंबर UP 33 AN 9765 जिसके वाइजर पर SPG तथा पीछे की नंबर प्लेट के नीचे मडगार्ड पर अंग्रेजी में POLICE लिखा हुआ मिला। अभियुक्त के विरुद्ध मु0अ0सं0 266/24 धारा 204/318(4)/338/336(2)/340(2) BNS का अभियोग पंजीकृत कर मा0 न्यायालय के समक्ष प्रस्तुत कर विधिक कार्यवाही की जा रही है।

एक नजर

डीपीएस बिल्हौर में आर्ट ऑफ गुड पेरेंटिंग विषय पर कार्यशाला का हुआ सफल आयोजन

नवयुग समाचार संवाददाता

बिल्हौर: जनपद कानपुर के तहसील बिल्हौर अंतर्गत बिल्हौर नगर क्षेत्र में ककवन रोड स्थित दिल्ली पब्लिक स्कूल बिल्हौर में आर्ट ऑफ गुड पेरेंटिंग विषय पर एक ज्ञानवर्धन सत्र का आयोजन किया गया। माता सरस्वती जी की वंदना एवं दीप प्रज्वलन के साथ कार्यशाला का शुभारंभ हुआ। कार्यक्रम का संचालन डॉ. संजय त्रिपाठी ने किया। उक्त अवसर पर डीपीएस ट्रस्टी डॉ. अमित कटियार ने मुख्य अतिथि डॉ. त्रिदिव उपाध्याय को, हेड मिस्ट्रेस वर्तिका सिंह ने वाइस चेयरमैन श्रीमती प्रतिमा कटियार को, डॉ. संजय त्रिपाठी ने प्रिंसिपल विवेक सिंह को, प्रिंसिपल विवेक सिंह ने अतिथि मनोज पांडे को पुष्पगुच्छ (बुके) देकर सम्मानित किया। मुख्य अतिथि डॉ. त्रिदिव उपाध्याय ने सभी उपस्थित पत्रकारों, अभिवावकों, अधिवक्ताओं, प्रधानों, महिलाओं एवं सभासदों को संबोधित करते हुए आर्ट ऑफ गुड पेरेंटिंग विषय पर जानकारी दी। अंत में हेड मिस्ट्रेस वर्तिका सिंह ने सभी आए हुए पत्रकारों, ग्रामप्रधानों, व्यापारियों, सामाजिक कार्यकताओं, सभासदों, अधिवक्ताओं एवं अभिवावकों के प्रति आभार व्यक्त किया। डॉ. त्रिदिव उपाध्याय ने एक प्रेरणादायक एवं व्यावहारिक वक्तव्य प्रस्तुत किया। आपने गुड पेरेंटिंग की विभिन्न तकनीकों, बच्चों में भावनात्मक बुद्धिमत्ता को बढ़ावा देने के उपायों और सकारात्मक व्यवहार को बढ़ावा देने के सुझाव दिए। जिसे सभी उपस्थित लोगों ने सराहा। उक्त कार्यक्रम प्रिंसिपल विवेक सिंह के नेतृत्व में आयोजित किया गया। आपने सभी सम्मानित प्रतिभागियों का स्वागत किया और सत्र के उद्देश्य की जानकारी दी। अंत में हेड मिस्ट्रेस वर्तिका सिंह ने सभी सम्मानित अतिथियों, मैनेजमेंट से जुड़े लोगों एवं डॉ.उपाध्याय के प्रति धन्यवाद ज्ञापित किया। प्रेरणादायक व्याख्यान की उपस्थित लोगों में सुगबुगाहट देखने को मिली। लोग महत्वपूर्ण सीख लेकर गये। आपको बता दें कि दिल्ली पब्लिक स्कूल बिल्हौर एक प्रमुख शैक्षणिक संस्थान है। जिसका शुभारंभ इसी आगामी सत्र से हो रहा है। जिसके लिए बच्चों का रजिस्ट्रेशन प्रारंभ हो गया है। प्रबंधन ने छात्रों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा एवं समग्र विकास के लिए अपनी प्रतिबद्धता व्यक्त की। अंत में मुख्य अतिथि को स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया।

उक्त अवसर पर ट्रस्टी डॉ. अमित कटियार, वाइस चेयरमैन प्रतिमा कटियार, प्रिंसिपल विवेक सिंह, हेड मिस्ट्रेस वर्तिका सिंह, ऑफिस मैनेजर, स्टेट मैनेजर अरविंदर सिंह, रजिस्ट्रार धीरज जोशी आदि मौजूद रहे।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय पशु आरोग्य शिविर का हुआ आयोजन

458 पशुओं का उपचार कर वितरित की दवाइयां, दी जानकारी

दिलीप सिंह नवयुग समाचार

अलीगंज। विकासखंड अलीगंज क्षेत्र में पंडित दीनदयाल उपाध्याय पशु आरोग्य शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में पशुओं का उपचार व टीकाकरण किया गया साथ ही पशुपालकों को सरकार द्वारा चलाई जा रही योजनाओं की जानकारी उपलब्ध कराई। पशुओं को ठंड से बचाने के बारे में जानकारी दी गई।

अलीगंज के ग्राम खैरपुरा में पंडित दीनदयाल उपाध्याय पशु आरोग्य शिविर का आयोजन किया गया। शिविर का शुभारंभ विधायक पुत्र जितेंद्र प्रताप सिंह द्वारा गौ माता की पूजा कर और पण्डित दीनदयाल उपाध्याय के चित्र पर माल्यार्पण कर और फीता काटकर शुभारंभ किया। शिविर में आए पशुओं का निःशुल्क उपचार और टीकाकरण किया गया। वहीं पशु चिकित्सकों ने पशु पालकों को दवाइयां वितरित कर नियमित रूप से पशुओं को दवाइयों की खुराक देने के जानकारी दी। शिविर में 458 पशुओं का परीक्षण एवं उनकी चिकित्सा की गई। इस मौके पर उपमुख्य चिकित्साधिकारी डॉ रविकांत ने पशुओं के प्रजनन तथा नस्ल सुधार के संबंध में जानकारी देते हुए बताया कि ग्रामीण क्षेत्रों में किसानों के पास आजीविका के क्रम में पशुपालन का एक विशेष महत्व है जिसके तहत प्रत्येक किसान दुधारू पशुओं का पालन कर अधिक लाभ उठा सकते हैं। पशुओं के ठंड से बचाव एवं चारे के बारे में जानकारी दिया। इस मौके पर पशुपालक और ग्रामीण मौजूद रहे।

अज्ञात वाहन ने बाइक सवार में मारी टक्कर, एक की मौत, एक गंभीर घायल, रैफर

दिलीप सिंह नवयुग समाचार

अलीगंज। थाना अलीगंज क्षेत्र में दावत खाने जा रहे दो बाइक सवारों को अज्ञात वाहन ने टक्कर मार दी जिससे दोनों बाइक सवार गंभीर रूप से घायल हो गए।

घायलों को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में भर्ती कराया गया जहां एक को मृत घोषित कर दिया तथा दूसरे की गंभीर हालत देखते हुए हायर सेंटर रेफर कर दिया। थाना कायमगंज फरुर्खाबाद के ग्राम अजमतपुर निवासी हरीराम पुत्र रामस्वरूप ने थाना अलीगंज में प्रार्थना पत्र देकर मामला दर्ज कराते हुए बताया कि प्रार्थी का भतीजा जितेंद्र पुत्र मोहन पाल 28 नवंबर को गौरीशंकर पुत्र तोताराम के साथ मोटरसाइकिल पर बैठकर हतसारी रिश्तेदारी मे दावत खाने जा रही थे तभी सामने से आ रही तेज रफ्तार गाड़ी ने टक्कर मार दी

जिससे मेरे भतीजे जितेंद्र व गौरीशंकर गंभीर रूप से घायल हो गए जिनको घायल अवस्था में सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र भर्ती कराया जहां मेरे भतीजे जितेंद्र की मृत्यु हो गई तथा गौरीशंकर को गंभीर अवस्था देखते हुए हायर सेंटर रेफर कर दिया। थाना पुलिस द्वारा मामला दर्ज कर अग्रिम कार्रवाई की जा रही है।

केयरटेकरों की समस्याओं को लेकर धरना प्रदर्शन जारी

कैलाश नाथ तिवारी/ नवयुग समाचार

अम्बेडकरनगर। जिला कलेक्ट्रेट के सामने डॉक्टर भीमराव अंबेडकर मूर्ति के नीचे अनिश्चितकालीन तक अपनी समस्याओं को लेकर केयर टेकरों का धरना प्रदर्शन जारी है। इनका कहना है कोई भी प्रशासनिक अधिकारी एवम कर्मचारी समस्याओं की सुनवाई नही कर रहा।

जिलाअध्यक्ष श्रीमती निशा देवी द्वारा राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन के तहत नियुक्ति केयर टेकरों का मानदेय व्यक्तिगत खाते में दिए जाने के संबंध में श्रीमान जिला अधिकारी महोदय को एक ज्ञापन पत्र सौपा गया। उक्त संबंध में अध्यक्ष महोदय का कहना है कि इस धरना प्रदर्शन में यदि किसी केयर टेकरों के साथ कोई अनहोनी घटना घटित होती है तो सारी जिम्मेदारी जिलाधिकारी महोदय , मुख्यविकास अधिकारी महोदय, एन.आर.एल.एम. महोदय तथा प्रशासनिक अधिकारियों की होगी।

प्रशासनिक उपेक्षा के विरुद्ध पीड़ित परिवारों का आमरण अनशन

कैलाश नाथ तिवारी/ नवयुग समाचार

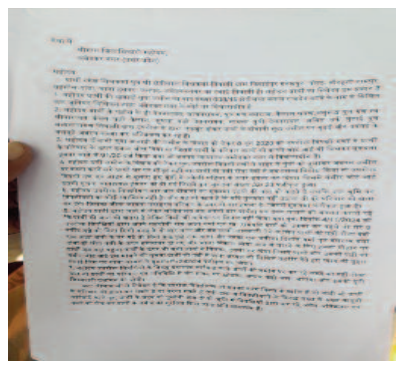

अयोध्या/अम्बेडकरनगर।प्रशासनिक उपेक्षा के विरुद्ध तीन पीड़ित परिवारों का विगत दिनों से चल रहा आमरण अनशन का आज के 48घंटे बीतने को है लेकिन कोई भी सक्षम अधिकारी पूछने के लिए नहीं आया और न ही कोई मेडिकल टीम अनशन स्थल पर पहुंची है, अनशनकारियों की तबीयत भी बिगड़ती जा रही है, ग्राम फिदाईपुर गणेशपुर, थाना हंसवर के निवासी रमेश विश्वकर्मा, ग्राम अजमेरी बादशाहपुर, फत्तेपुर के निवासी राम संवारे कनौजिया, और ग्राम चाचिकपुर, थाना अहिरौली के निवासी राम उजागर यादव। प्रशासनिक उपेक्षा के कारण न्याय पाने के लिए आमरण अनशन पर बैठने को मजबूर हैं, रमेश विश्वकर्मा की आबादी सुदा भूमि का विवाद न्यायालय में विचाराधीन है (वाद संख्या 608/19), लेकिन विपक्षीगण अपने दबंगई और बाहुबल के आधार पर भूमि पर कब्जा करने का प्रयास कर रहे हैं। 8 जून 2020 विपक्षियों द्वारा पीड़ित परिवार पर हमला, जिसमें परिवार के सदस्यों को गंभीर चोटें आईं। 4 नवंबर 2024 पीड़ित के नववर्षीय बच्चे और पत्नी पर जानलेवा हमला। रमेश विश्वकर्मा ने पुलिस, आईजी रेंज और मुख्यमंत्री तक शिकायत की, लेकिन कोई कार्यवाही नहीं हुई, राम संवारे कनौजिया का मामला गाटा संख्या 1871/ 2026 (जो उनकी बहू सोनी के नाम दर्ज हैं) पर विपक्षी रामधनी और फूलचंद जबरन फसल काटने और जमीन की जुताई करते हैं। पीड़ित ने राजस्व और पुलिस प्रशासन को कई बार सूचित किया, लेकिन मिलीभगत के चलते कोई कार्यवाही नहीं हुई, न्यायालय द्वारा स्थगन आदेश होने के बावजूद भी विपक्षियों का कब्जा जारी है, तीसरेऑ पीड़ित की बाउंड्री के अंदर एक सूखा महुआ का पेड़ है जो कभी भी गिरकर घर को छतिग्रस्त कर सकता है उस सूखे पेड़ को काटने से 3 किलोमीटर दूर के निवासी विपक्षीगण रोकते हैं, जबकि पेड़ का मालिकाना हक राम उजागर यादव के पास है, थाना अहिरौली पुलिस और वन विभाग की मिलीभगत से पीड़ित को पेड़ काटने से रोका जा रहा है, लगातार शिकायतों और ज्ञापन के बावजूद प्रशासन ने ऐसा कोई कदम नहीं उठाया जिससे कि पीड़ितों को न्याय मिल सके। अंततः तीनों पीड़ितों ने 11 नवंबर 2024 को जिलाधिकारी अंबेडकर नगर को ज्ञापन सौपा, लेकिन आज तक कोई कार्यवाही नहीं हुई है उक्त मामलों में न्याय और दोषी अधिकारियों व कर्मचारियों के निलंबन की मांग पूरी होने तक तीनों पीड़ित आमरण अनशन जारी रखने का निर्णय ले चुके हैं।

पुलिस अधीक्षक उन्नाव दीपक भूकर द्वारा शुक्रवार की साप्ताहिक परेड की सलामी ली गयी तथा परेड का निरीक्षण किया गया

मोहम्मद इरफान खान/नवयुग समाचार

उन्नाव: पुलिस अधीक्षक उन्नाव, दीपक भूकर द्वारा शुक्रवार की साप्ताहिक परेड की सलामी ली गयी तथा परेड का निरीक्षण किया गया। परेड में पुलिस लाइन का पुलिस बल तथा विभिन्न कार्यालयों एवं थानों में नियुक्त पुलिसकर्मी सम्मिलित हुए।

परेड निरीक्षण के उपरान्त महोदय द्वारा शस्त्र निरीक्षण, पुलिस लाइन परिसर, क्वार्टर गार्द, कार्यालय डायल 112, परिवहन शाखा एवं पीआरवी, गार्द रजिस्टर आदि का निरीक्षण कर सम्बंधित को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए गए। इस दौरान क्षेत्राधिकारी सफीपुर , प्रशिक्षु क्षेत्राधिकारी व प्रतिसार निरीक्षक मौजूद रहें ।

भगवान श्रीकृष्ण-रूकमणि का वरमाला कार्यक्रम सम्पन्न

कैलाश नाथ तिवारी/ नवयुग समाचार

अम्बेडकरनगर। कटेहरी विधान सभा क्षेत्र के शाहपुर प्रतापीपुर में श्रीमद् भागवत कथा के छट्ठे दिन भगवान कृष्ण- रूकमणि विवाह की झांकी सजाई गई। भगवान श्री कृष्ण की बैंडबाजों के साथ बारात निकाली गई। सखियों के साथ रुक्मणी को पांडाल में लाया गया। मंच पर भगवान श्रीकृष्ण-रूकमणि का वरमाला कार्यक्रम भव्य रूप से सम्पन्न हुआ।

विवाह के दौरान श्रोताओं ने भी कन्यादान कार्यक्रम में भाग लिया। विवाह के दौरान पूरे पांडाल में पुष्प वर्षा भी हुई। श्रीकृष्ण रूकमणि विवाह के सजीव मंचन को देख श्रोता भाव विभोर हो गए। कृष्ण-रुकमणी के रूप में पवनी पांडेय भतीजी और भांजी मेहधीय मिश्रा ने सजीव मंचन कर श्रद्धालुओं का मन मोह लिया।कथा वाचक आचार्य श्याम सारथी जी महाराज द्वारा श्रीमद् भागवत ज्ञान कथा का वाचक करते हुए भजनों के साथ देवताओं का गंधर्व विधान, कंस का श्रीकृष्ण द्वारा वध, वृन्दावन में कृष्ण का अभिषेक एवं श्रीकृष्ण की गोपियों संग प्रेम लीला तथा श्रीकृष्ण का रुक्मणी के साथ विवाह आदि प्रसंग सुनाए। मुख्य अतिथि कथा में हनुमान गढ़ी के महंत राम दास जी महाराज और पूर्व ब्लॉक प्रमुख बड़े भाई अजय सिंह सिपाही जी उपस्थित रहे।

स्कूल में मोबाइल छीनने पर छात्र ने टीचर पर चाकू से किया हमला

नवयुग समाचार

बहराइच से एक सनसनीखेज वारदात सामने आया है। जरूरत के साथ मोबाइल जीवन के लिए अभिशाप बनता चला जा रहा है। इसकी एक बानगी जनपद बहराइच के मिहीनपुरवा इलाके में देखने को मिली, जहां स्कूल में मोबाइल चला रहे छात्र को जब शिक्षक ने मना किया तो मोबाइल के नशे में चूर छात्र ने शिक्षक पर चाकू से वार कर दिया।

घटना का वीडियो तेजी से सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है।

वीडियो में देखा जा सकता है कि कैसे टीचर कुर्सी पर बैठकर अपना काम कर रहे हैं। और बेंच से एक स्टूडेंट उठकर आता है, कुछ सेकेंड के लिए खड़े होने के बाद टीचर के ऊपर हमला कर देता है। वहीं छात्र के द्वारा किये गए हमले में स्कूल शिक्षक गंभीर रूप से घायल हो गए। उन्हें इलाज के लिए नजदीकी अस्पताल में भर्ती कराया गया और फिर वहां से उन्हें मेडिकल कॉलेज रेफर किया गया है।

4 दिन पहले टीचर ने जब्त की थी मोबाइल

बताया जा रहा है कि नवयुग इंटर कॉलेज के शिक्षक राजेंद्र प्रसाद ने 4 दिन पहले क्लास के एक छात्र को मोबाइल चलाने से मना किया था और उसका मोबाइल जप्त कर लिया था। इसके बाद नाराज होकर छात्र ने आज शिक्षक के ऊपर चाकू से हमला किया। जैसे ही छात्र ने शिक्षक को चाकू मारा पूरे क्लास में अफरा तफरी मच गई। आनंन-फानन में शिक्षक को नजदीकी अस्पताल में भर्ती करवाया गया जहां से डॉक्टरों ने मेडिकल कॉलेज रेफर कर दिया।

आरोपी छात्र के खिलाफ ऋक्ष्कदर्ज

इस मामले में अपर पुलिस अधीक्षक रामानंद कुशवाहा का कहना है कि आरोपी छात्र के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर लिया गया है। आगे की विधिक कार्रवाई की जा रही है।

थाना मोतीपुर पुलिस द्वारा 13 ग्राम स्मैक के साथ एन0डी0पी0एस0 एक्ट में 01 नफर अभियुक्त को किया गया गिरफ्तार

नवयुग समाचार

बहराइच पुलिस अधीक्षक द्वारा मादक पदार्थों की तस्करी के सम्बन्ध में चलाये जा रहे सघन चेकिंग अभियान के सम्बन्ध में दिये गये निर्देश के क्रम में अपर पुलिस अधीक्षक (ग्रामीण) दुर्गा प्रसाद तिवारी व क्षेत्राधिकारी मिहीपुरवा हिरालाल कनौजिया के निर्देशन में अपराध एवं अपराधियो की रोकथाम जुर्म जरायम को रोकने हेतु मुझ प्रभारी निरीक्षक राकेश कुमार पाण्डेय के कुशल नेतृत्व में गठित टीम द्वारा दिनांक 12.12.2024 को थाना क्षेत्र भारत नेपाल बार्डर के पिलर सं0 665 ग्राम लौकाही के पास चेकिंग के दौरान एक नफर अभियुक्त अमर बहादुर क्षेत्री पुत्र योगेन्द्र बहादुर क्षेत्री निवासी कालिका 07 कंठापुर जनपद बर्दिया राष्ट्र नेपाल को 13 ग्राम स्मैक के साथ गिरफ्तार कर थाना स्थानीय पर मु0अ0सं0 624 /24 धारा 8/21 एनडीपीएस एक्ट पंजीकृत कर अभियुक्त को न्यायिक हिरासत में भेजा गया।

उल्लेखनीय है कि मै उ0नि0 अजय प्रताप यादव मय हमराह हे0का0 धर्मेन्द्र राव , का0 विनय कुमार व एसएसबी बल के साथ देखभाल क्षेत्र, चेकिंग वाहन /संदिग्ध व्यक्ति रोकथाम जुर्म जरायम रोकथाम तस्करी हेतु क्षेत्र मे मामूर था दौरान चेकिंग अभियुक्त अमर बहादुर क्षेत्री पुत्र योगेन्द्र बहादुर क्षेत्री निवासी कालिका 07 कंठापुर जनपद बर्दिया राष्ट्र नेपाल को 13 ग्राम स्मैक के साथ गिरफ्तार किया गया गिरफ्तारी व बरामदगी के आधार पर थाना स्थानी पर मुकदमा पंजीकृत कर जेल भेजा गया ।

ऊंच-नीच का भेदभाव मिटाकर हिन्दू एकजुट हो-ऋषि त्रिवेदी

लखनऊः अखण्ड आर्यावर्त आर्य त्रिदंडी महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष ऋषि त्रिवेदी ने आज यहां कार्यकर्ता सम्मेलन को सम्बोधित करते हुये कहा कि जात-पात और आरक्षण की राजनीति से उपर उठकर हिन्दुओं को एकजुट होने का समय आ गया है, अन्यथा पाकिस्तान, बांग्लादेश में हिन्दुओं के साथ हो रहे अत्याचारों को आने वाले समय में सामना करने के लिये तैयार रहे। सीतापुर के ग्राम शाहमहोली में हुये कार्यकर्ता सम्मेलन में पहुंचे पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री त्रिवेदी ने कहा कि पहले देश को धार्मिक आधार पर तोड़कर इस्लामिक पाकिस्तान बनाने के बाद भारत में धर्मनिरपेक्ष के नाम धर्मशाला बनाने वाले उस समय के सत्तालोभियों ने हिन्दुओं में जात-वाद का जहर घोलकर देश को एक बार फिर उसी मुहाने पर धकेलने का काम किया जिस समय बंटवारे के समय भारत की स्थिति थी। श्री त्रिवेदी ने सचेत करते हुये कहा कि हिन्दुओं के पास अभी भी समय है, कि वह जात-पात और ऊंच-नीच का भेदभाव मिटाकर एकजुट हो। सम्मेलन को राष्ट्रीय प्रवक्ता बाबा महादेव, प्रदेश कार्यकारी अध्यक्ष चन्द्रमौलि शुक्ला सहित कई नेताओं ने भी सम्बोधित किया। इस मौके पर मंडल अध्यक्ष लखनऊ अनीता तिवारी, मंडल उपाध्यक्ष रिंकी सिंह, सुनील शुक्ला, सुनील सिंह सीतापुर जिला अध्यक्ष रमेश नंद पुरी सहित सैकड़ो कार्यकर्ता उपस्थित रहे। महिला मंडल अध्यक्ष अनीता तिवारी के द्वारा हुये कार्यकर्ता सम्मेलन में नवनियुक्त पदाधिकारी को नियुक्ति पत्र फूल माला एवं अंग वस्त्र से स्वागत किया गया।

अलीगंज ग्रामीण न्यायालय का जिला जज ने किया औचक निरीक्षण

विचाराधीन मामलों के जल्द निस्तारण का दिया निर्देश

दिलीप सिंह नवयुग समाचार

अलीगंज। एटा के जिला जज नें गुरुवार को अलीगंज ग्रामीण न्यायालय पहुंचकर न्यायालय का औचक निरीक्षण किया। जिला जज नें ग्राम न्यायालय की व्यवस्थाओं का जायजा लिया। उन्होंने न्यायालय में विचाराधीन वाद की फाइलों को देखा और ग्राम न्यायाधिकारी को उचित निर्देश भी दिया। गुरुवार को अलीगंज किला स्थित ग्रामीण न्यायालय पहुंचे जिला जज दिनेश कुमार ने ग्राम न्यायालय के न्यायाधिकारी अश्वनी कुमार से न्यायिक कार्यों के विषय में जानकारी ली। उन्होंने कार्यालय में फाइलों के रख-रखाव, वादकारियों के लिए पेयजल की व्यवस्था आदि को देखा। उन्होंने जनता की समस्याओं को देखते हुए ग्राम न्यायाधिकारी को विचाराधीन वादों के त्वरित निस्तारण का निर्देश दिया। वही जिला जज ने अधिवक्ताओं से वार्ता की। वकीलों ने जिला जज से मिलकर ग्राम न्यायालय में विचाराधीन वादों और अन्य समस्याओं के संबंध में चर्चा की। इस पर जिला जज ने निष्पक्ष न्याय और मामलों के त्वरित निस्तारण का आश्वासन दिया। इस अवसर पर जिला जज दिनेश कुमार के अलावा एपीओ गजेंद्र सिंह, कोतवाली प्रभारी अलीगंज निर्दोष कुमार सेंगर, कस्बा इंचार्ज शिवकुमार सहित अन्य मौजूद रहे।

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक मनीष कुमार सिंह द्वारा शोभित आफसेट के-450 इंद्रलोक कॉलोनी, पोस्ट मानसनगर, लखनऊ - 226023 उ.प्र. से मुद्रित कराकर मुकेरिया, महसी, रामगांव, बहराइच से प्रकाशित। आरएनआई/टाइटल कोड-UPHIN49594
संपादक-मनीष कुमार सिंह मो.- +91 9984176988 ई-मेल- navyugsamacharindia@gmail.com उप संपादक-मो. इजहार वारसी, मो. +91 7081640677, प्रबंध संपादक-संजय कुमार त्रिपाठी, मो.- +91 9044973372, सभी विवादों का न्याय क्षेत्र बहराइच, उ.प्र. होगा।